देश विदेश की लोक कथाऐं — एक कहानी कई रंग–10 ः

रैड राइडिंग हुड जैसी कहानियॉ

संकलनकर्ता
सुषमा गुप्ता

Book Title: Red Riding Hood Jaisi Kahaniyan (Red Riding Hood Like Stories)
Cover Page picture : Little Red Riding Hood
Published Under the Auspices of Akhil Bhartiya Sahityalok

E-Mail: sushmajee@yahoo.com
Website: www.sushmajee.com/folktales/index-folktales.htm
Read More such stories at: www.scribd.com/sushma_gupta_1

Copyrighted by Sushma Gupta 2018
No portion of this book may be reproduced or stored in a retrieval system or transmitted in any form, by any means, mechanical, electronic, photocopying, recording, or otherwise, without written permission from the author.

Map of the World

विंडसर, कैनेडा

मार्च 2018

Contents

सीरीज़ की भूमिका 4

रैड राइडिंग हुड जैसी कहानियॉ 5

1 छोटी लाल टोपी वाली लड़की 7

2 छोटी लाल टोपी–1 13

3 छोटी लाल टोपी–2 22

4 नानी 30

5 नकली नानी 35

6 छोटी सुनहरी टोपी का सच्चा इतिहास 42

7 भेड़िया और तीन लड़कियॉ 51

8 छोटी लाल टोपी–3 55

9 कैटैरीनैटा 61

10 तैरने वाली बतख़ जमीमा की कहानी 64

सीरीज़ की भूमिका

लोक कथाऐं किसी भी समाज की संस्कृति का एक अटूट हिस्सा होती हैं। ये संसार को उस समाज के बारे में बताती हैं जिसकी वे लोक कथाऐं हैं। आज से बहुत साल पहले, करीब **100** साल पहले, ये लोक कथाऐं केवल ज़बानी ही कही जातीं थीं और कह सुन कर ही एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को दी जाती थीं इसलिये किसी भी लोक कथा का मूल रूप क्या रहा होगा यह कहना मुश्किल है।

आज हम ऐसी ही कुछ अंग्रेजी और कुछ दूसरी भाषा बोलने वाले देशों की लोक कथाऐं अपने हिन्दी भाषा बोलने वाले समाज तक पहुँचाने का प्रयास कर रहे हैं। इनमें से बहुत सारी लोक कथाऐं हमने अंग्रेजी की किताबों से, कुछ विश्वविद्यालयों में दी गयी थीसेज़ से, और कुछ पत्रिकाओं से ली हैं और कुछ लोगों से सुन कर भी लिखी हैं। अब तक **1200** से अधिक लोक कथाऐं हिन्दी में लिखी जा चुकी हैं। इनमें से **400** से भी अधिक लोक कथाऐं तो केवल अफ्रीका के देशों की ही हैं।

इस बात का विशेष ध्यान रखा गया है कि ये सब लोक कथाऐं हर वह आदमी पढ़ सके जो थोड़ी सी भी हिन्दी पढ़ना जानता हो और उसे समझता हो। ये कथाऐं यहाँ तो सरल भाषा में लिखी गयी है पर इनको हिन्दी में लिखने में कई समस्याऐं आयी है जिनमें से दो समस्याऐं मुख्य हैं।

एक तो यह कि करीब करीब **95** प्रतिशत विदेशी नामों को हिन्दी में लिखना बहुत मुश्किल है चाहे वे आदमियों के हों या फिर जगहों के। दूसरे उनका उच्चारण भी बहुत ही अलग तरीके का होता है। कोई कुछ बोलता है तो कोई कुछ। इसको साफ करने के लिये इस सीरीज़ की सब किताबों में फुटनोट्स में उनको अंग्रेजी में लिख दिया गया हैं ताकि कोई भी उनको अंग्रेजी के शब्दों की सहायता से कहीं भी खोज सके। इसके अलावा और भी बहुत सारे शब्द जो हमारे भारत के लोगों के लिये नये हैं उनको भी फुटनोट्स और चित्रों द्वारा समझाया गया है।

ये सब कथाऐं "देश विदेश की लोक कथाऐं" नाम की सीरीज के अन्तर्गत छापी जा रही हैं। ये लोक कथाऐं आप सबका मनोरंजन तो करेंगी ही साथ में दूसरे देशों की संस्कृति के बारे में भी जानकारी देंगी। आशा है कि हिन्दी साहित्य जगत में इनका भव्य स्वागत होगा।

सुषमा गुप्ता
मई **2018**

रैड राइडिंग हुड जैसी कहानियॉ

हमने एक नयी सीरीज़ शुरू की है "एक कहानी कई रंग"। इसमें वे कथाऐं शामिल की गयीं हैं जो सुनने में एक सी लगती हैं पर अलग अलग जगहों पर अलग अलग तरीके से कही सुनी जाती हैं।

बच्चों जैसे तुम लोग कहानियॉ सुनते हो वैसे ही दूसरे देशों में भी वहॉ के बच्चे कहानियॉ सुनते हैं। क्योंकि कहानियॉ हर समाज की अलग अलग होती हैं इसलिये उन बच्चों की कहानियॉ भी तुम्हारी कहानियों से अलग हैं।

पर कुछ कहानियॉ ऐसी भी हैं जो भिन्न भिन्न देशों में कही सुनी जाती हैं पर सुनने में एक सी लगती हैं। यहॉ कुछ ऐसी ही कहानियॉ दी जा रही हैं। ये सब कहानियॉ कुछ इस तरह से चुनी गयी हैं कि ये सब कहानियॉ एक सी कहानियों की श्रेणी में रखी जा सकती हैं। ऐसी बहुत सी कहानियॉ हैं। ऐसी कहानियॉ हम "एक कहानी कई रंग" की सीरीज़ के अन्तर्गत प्रकाशित कर रहे हैं। अगर इन कहानियों के अलावा भी तुम और कोई ऐसी कहानी जानते हो तो हमें जरूर लिखना। हम उसको इसके अगले आने वाले संस्करण में शामिल करने का प्रयास करेंगे। इन सभी पुस्तकों में सबसे पहले मूल कहानी दी गयी है फिर उसके बाद वैसी ही दूसरे देशों में कही जाने वाली कहानियॉ कही गयीं हैं।

इस सीरीज़ में, यानी "एक कहानी कई रंग" की सीरीज़ में, इससे पहले हम नौ पुस्तकें प्रकाशित कर चुके हैं।

इन कहानियों की सीरीज़ में सबसे पहली पुस्तक थी "बिल्ला और चुहिया जैसी कहानियॉ"।

"एक कहानी कई रंग–1" में "बिल्ला और चुहिया" जैसी कहानियॉ थीं।[1]

इसकी दूसरी पुस्तक में "टौम थम्ब" जैसी कहानियॉ दी गयीं थीं। इसमें बहुत छोटे बच्चे के कारनामों की कथाऐं हैं।[2]

इस सीरीज़ की तीसरी पुस्तक "छह हंस" जैसी कुछ कहानियों का संग्रह है जिसकी कहानियों की हीरोइन एक छोटी लड़की, साधारणतया सबसे छोटी बहिन, होती है जो अपने दो या चार या सात भाइयों को पक्षी या जानवर बन जाने के शाप से छुटकारा दिलाती है। ये सब कहानियॉ बहिन भाई के प्यार की कहानियॉ हैं।[3]

इस सीरीज़ की चौथी पुस्तक कुछ ऐसी कहानियों का संग्रह है जो "तीन सन्तरे" कहानी जैसी हैं।[4]

इसी सीरीज़ की पॉचवी पुस्तक में "सफेद राजकुमारी और सात बौने"[5] वाली कहानी जैसी कुछ कहानियॉ दी गयी हैं। यह कहानी यूरोप के देशों की एक बहुत ही लोकप्रिय कहानी है।

इस सीरीज़ की छठी पुस्तक में "सोती हुई सुन्दरी..." जैसी कहानियॉ हैं।[6]

इस सीरीज़ की सातवीं पुस्तक में "सूअर राजा"[7] जैसी कुछ कहानियॉ दी गयी हैं।

इस सीरीज़ की आठवीं पुस्तक में "बूट पहने हुए बिल्ला"[8] जैसी कुछ लोक कथाऐं दी गयी हैं।

---

[1] "One Story Many Colors-1" – like "Cat and Rat"
[2] "One Story Many Colors-2" – like "Tom Thumb"
[3] "One Story Many Colors-3" – like "Six Swans"
[4] "One Story Many Colors-4" – like "Three Oranges"
[5] "One Story Many Colors-5" – like" Snow White and the Seven Dwarves"
[6] "One Story Many Colors-6" – like "Sleeping Beauty"
[7] "One Story Many Colors-7" – like "The Pig King" (in 3 parts)
[8] "One Story Many Colors-8" – like "Puss in Boots"

इस सीरीज़ की नवीं पुस्तक में "हैन्सैल और ग्रेटैल" जैसी कहानियॉ दी गयी हैं।[9]

इस सीरीज़ की इस दसवीं पुस्तक में "रैड राइडिंग हुड" जैसी कुछ कहानियॉ दी जा रही हैं।

हमें विश्वास है कि ये लोक कथाऐं भी तुम लोगों को इन लोक कथाओं की सीरीज़ में प्रकाशित की गयी दूसरी पुस्तकों की तरह ही बहुत पसन्द आयेंगी।

[9] "One Story Many Colors-9" – like "Hansel and Gratel"

1 छोटी लाल टोपी वाली लड़की[10]

रैड राइडिंग हुड अंग्रेजी में या छोटी लाल टोपी वाली लड़की हिन्दी में की कहानी यूरोप के देशों की एक बहुत ही लोकप्रिय और मशहूर लोक कथा है और बच्चों को उनके बचपन से ही सुनायी जाती है जैसे ही वे भाषा समझने लायक हो जाते हैं।

ऐसी केवल एक ही कहानी नहीं हैं बल्कि कई कहानियॉ है और कई देशों में कही सुनी जाती हैं। तो आओ आज पढ़ते वैसी कहानियॉ हिन्दी में।

यह बहुत पुरानी बात है कि किसी गॉव में एक बहुत ही सुन्दर देहाती लड़की रहती थी। उसकी मॉ तो उसको बहुत प्यार करती ही थी पर उसकी नानी तो उसको उसकी मॉ से भी ज़्यादा प्यार करती थी।

एक बार उस लड़की की मॉ ने उसके लिये एक लाल रंग की टोपी बना दी थी। वह टोपी उसको बहुत अच्छी लगती थी सो वह अक्सर ही उसको पहने रहती। वह टोपी उसके ऊपर इतनी अच्छी

[10] Little Red Riding Hood – a folktale taken from the Web Site : http://www.pitt.edu/~dash/perrault02.html. by Charles Perrault
Source : Andrew Lang's "The Blue Fairy Book (London, ca. 1889).
Lang's source – Charles Perrault, "Histoires ou contes du temps passé, avec des moralités: Contes de ma mère l'Oye (Paris, 1697).
This tale is a European folktale. Its origin may be traced back from 10th century folktales, including a tale from Italy "False Grandmother" – best known versions were given by Charles Perrault and Brothers Grimm.

लगती थी कि हर आदमी उसको छोटी लाल टोपी वाली लड़की[11] कह कर बुलाता था।

एक दिन उसकी मॉ ने कुछ केक बनाये तो उसने अपनी बेटी से कहा — "जा और ज़रा देख कर आ कि तेरी नानी कैसी है। क्योंकि मैंने सुना है कि वह बहुत बीमार है। तू उनके लिये यह केक

ले जा और यह मक्खन का बरतन भी।"

छोटी लाल टोपी वाली लड़की तुरन्त ही अपनी नानी को देखने चल दी। उसकी नानी दूसरे गॉव में रहती थी। उसके गॉव जाते समय एक जंगल से गुजरना पड़ता था।

जब वह जंगल में से गुजर रही थी तो उसको एक भेड़िया मिल गया। वह भेड़िया उसको खाना चाहता था पर उस समय उसकी उसको खाने की हिम्मत नहीं हो रही थी क्योंकि जंगल में पास में ही कुछ लकड़हारे काम कर रहे थे। वह उन लकड़हारों से डर रहा था।

उसने लड़की से पूछा कि वह कहॉ जा रही है। उस बेचारी बच्ची को तो यही पता नहीं था कि उसका वहॉ ठहरना और एक भेड़िये से बात करना बहुत खतरनाक है सो वह बोली — "मैं अपनी नानी को देखने जा रही हूॅ। मैं उसके लिये मॉ की दी हुई यह केक और मक्खन का बरतन ले कर जा रही हूॅ।"

[11] Little Red Riding Hood

भेड़िये ने पूछा — "क्या वह बहुत दूर रहती है?"

छोटी लाल टोपी वाली लड़की बोली — "ओह नहीं, वह जो सामने वाली चक्की तुम देख रहे हो न, बस वह उसके उस पार रहती है – गॉव का पहला घर।"

भेड़िया बोला — "मैं भी चलता हूॅ तुम्हारे साथ उसको देखने के लिये। मैं इस रास्ते से जाता हूॅ तुम उस रास्ते से जाओ। फिर हम देखते हैं कि कौन पहले पहुॅचता है।"

कह कर भेड़िया तो छोटे से छोटा रास्ता ले कर बहुत तेज़ी से दौड़ता हुआ लाल टोपी की नानी के घर भाग गया और वह बच्ची थोड़ा बड़ा रास्ता ले कर गिरियॉ[12] तोड़ती हुई, तितलियों के पीछे भागती हुई, फूलों के गुलदस्ते इकट्ठा करते हुए आनन्द करती हुई चली जा रही थी।

भेड़िया तो उस स्त्री के घर बहुत जल्दी पहुॅच गया और जा कर उसका दरवाजा खटखटाया "खट खट खट"।

"कौन है?"

भेड़िये ने आवाज बदल कर कहा — "मैं हूॅ आपकी धेवती[13] छोटी लाल टोपी वाली लड़की। मैं अपनी मॉ के पास से आपके लिये केक और मक्खन का एक बरतन ले कर आयी हूॅ।"

[12] Translated for the word "Nuts". See its picture above.

[13] Grand-daughter – daughter's or son's daughter

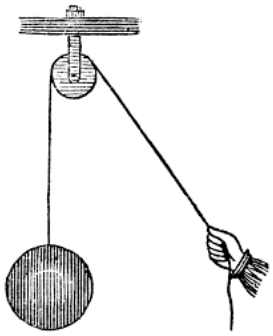

उसकी नानी कुछ बीमार थी सो वह बिस्तर में लेटी हुई थी। वह उठ नहीं सकती थी।

सो वह बोली — "तुम घिर्री[14] खींच लो तो दरवाजे का ताला खुल जायेगा।"

सो भेड़िये ने घिर्री खींच ली और नानी के घर का दरवाजा खुल गया। वह तुरन्त ही नानी के ऊपर कूद पड़ा और उसको पल भर में ही खा गया क्योंकि उसने तो तीन दिन से खाना नहीं खाया था।

नानी को खा कर और दरवाजा बन्द करके वह नानी के बिस्तर में घुस गया और छोटी लाल टोपी वाली लड़की का इन्तजार करने लगा।

कुछ देर बाद ही वह छोटी लाल टोपी वाली लड़की भी आ गयी और आ कर उसने दरवाजा खटखटाया "खट खट खट"।

"कौन है?"

छोटी लाल टोपी वाली लड़की ने जब भेड़िये की भारी सी आवाज सुनी तो पहले तो वह डर गयी पर फिर सोचा कि शायद नानी को जुकाम होगा इसी लिये उनकी आवाज इतनी भारी हो गयी है।

वह बोली — "नानी मैं आपकी धेवती छोटी लाल टोपी वाली लड़की। मैं आपके लिये मॉ का भेजा हुआ केक और मक्खन का बरतन ले कर आयी हूँ।"

[14] Translated for the word "Pulley" – see its picture above.

भेड़िया बिस्तर में से ही ज़ोर से पर जितनी मुलायमियत से बोल सकता था बोला — "घिर्री पकड़ कर खींच लो तो घर का दरवाजा खुल जायेगा।"

सो छोटी लाल टोपी वाली लड़की ने घिर्री खींची और घर का दरवाजा खुल गया। भेड़िये ने जब उसको अन्दर आते देखा तो वह बिस्तर में छिप गया और बोला — "केक और मक्खन का बरतन स्टूल पर रख दो और आ कर मेरे साथ मेरे बिस्तर में लेट जाओ।"

यह सुन कर छोटी लाल टोपी वाली लड़की ने अपने कपड़े उतार दिये और भेड़िये के साथ बिस्तर में जा कर लेट गयी। वह तो नानी को उनके सोने वाले कपड़ों में देख कर हैरान रह गयी कि उन कपड़ों में उसकी नानी कैसी लगती थीं।

वह बोली — "नानी, आपकी बॉहें कितनी लम्बी हैं।"

भेड़िया बोला — "ताकि मैं तुमको अच्छी तरह से गले लगा सकूँ मेरी प्यारी बेटी।"

लड़की फिर बोली — "नानी, आपकी टॉगें कितनी लम्बी हैं।"

भेड़िया बोला — "ताकि मैं अच्छी तरह से भाग सकूँ मेरी प्यारी बेटी।"

लड़की फिर बोली — "नानी, आपके कान कितने बड़े हैं।"

भेड़िया बोला — "ताकि मैं अच्छी तरह से सुन सकूँ मेरी प्यारी बेटी।"

लड़की फिर बोली — "नानी, आपकी ऑखें कितनी बड़ी हैं।"

भेड़िया बोला — "ताकि मैं अच्छी तरह से देख सकूँ मेरी प्यारी बेटी।"

लड़की फिर बोली — "और नानी, आपके दॉत कितने बड़े हैं।"

भेड़िया बोला — "ताकि मैं तुम्हें अच्छी तरह से खा सकूँ।"

और यह कहते ही भेड़िया लाल टोपी वाली लड़की पर कूद पड़ा और उसे खा गया।

इस कहानी से हमको यह शिक्षा मिलती है कि बहुत सुन्दर और कुलीन घरों की लड़कियों को अजनबियों से बात नहीं करनी चाहिये नहीं तो वे उनकी चालों का शिकार बन जाती हैं।

इसके अलावा बहुत सारे लोग ऐसे होते हैं जो अपने गुणों से दूसरों को बहुत जल्दी आकर्षित कर लेते हैं। वे भी भोले भाले लोगों को नुकसान पहुँचाते हैं इसलिये उनसे भी लोगों को सावधान रहना चाहिये।

2 छोटी लाल टोपी–1[15]

छोटी लाल टोपी वाली लड़की जैसी लोक कथाओं की इस पुस्तक में यह कथा यूरोप महाद्वीप के जर्मनी देश की लोक कथाओं से ली गयी है।

एक बार किसी गॉव में एक बहुत ही सुन्दर बड़ी प्यारी सी लड़की रहती थी। जो भी उसको देखता वही उसे पसन्द करने लगता पर सबसे ज़्यादा उसको प्यार करती थी उसकी नानी।

वह यही सोचती रहती कि वह उसको क्या दे। एक बार उसने उसके लिये एक लाल रंग की मखमल की टोपी बनायी और उसको दे दी। वह टोपी उसके ऊपर इतनी अच्छी लगती थी कि वह उस को हमेशा पहने रहती थी। इससे सब उसको छोटी लाल टोपी कह कर बुलाते थे।

एक दिन उसकी मॉ ने कहा — "ओ छोटी लाल टोपी, देखो यह एक केक है और यह एक बोतल शराब है। इनको तुम अपनी नानी के घर ले जाओ। वह बीमार हैं और कमजोर हैं ये चीज़ें उनको फायदा करेंगी।

उनके पास जा कर उनके साथ ठीक से बरताव करना और मेरी उनको नमस्ते कहना। और देखो रास्ते में भी ठीक से जाना सड़क

[15] Little Red Cap – a folktale from Germany, Europe.
by Grimm Brothers. This translation by DL Ashliman is based on the Grimms' final edition (1857)
Taken from the Web Site : http://www.pitt.edu/~dash/grimm026.html

सड़क जाना नहीं तो गिर जाओगी और यह बोतल टूट जायेगी। फिर तुम्हारी नानी के लिये कुछ भी नहीं बचेगा।

और जब तुम उनके घर के अन्दर घुसो तो उनको गुड मौर्निंग कहना मत भूलना और जाते ही उनके घर के हर कोने में झॉकने मत लग जाना।"

छोटी लाल टोपी ने मॉ से हाथ मिलाया और बोली — "मैं वैसा ही करूँगी जैसा आपने कहा है।" और केक और शराब की बोतल ले कर नानी के घर चल दी।

उसकी नानी वहॉ से करीब आधा घंटे की दूरी पर जंगल में रहती थी। जब लाल टोपी जंगल में घुसी तो उसके पास एक भेड़िया आया। उसको यह पता ही नहीं था कि वह कितना नीच जानवर है इसलिये वह उससे डरी ही नहीं।

भेड़िया लाल टोपी से बोला — "गुड डे[16] ओ लाल टोपी।"

"धन्यवाद ओ भेड़िये। तुमको भी गुड डे।"

"इतनी सुबह सुबह तुम कहॉ जा रही हो ओ लाल टोपी?"

लाल टोपी बोली — "मैं अपनी नानी के घर जा रही हूँ।"

"और तुम अपने ऐप्रन में छिपा कर क्या ले जा रही हो?"

लाल टोपी बोली — "मेरी नानी बीमार हैं और कमजोर हैं सो मैं उनके लिये केक और शराब ले कर जा रही हूँ। ये केक हमने

[16] General greeting for the day in English language, such as Good Morning or Good Evening.

उनके लिये कल बनायी थीं। इनको खा कर उनमें ताकत आयेगी।"

भेड़िये ने पूछा — "तुम्हारी नानी रहती कहॉ है?"

लाल टोपी बोली — उनका घर यहॉ से पन्द्रह मिनट की दूरी पर जंगल में है तीन बड़े ओक के पेड़ों[17] के नीचे। उनके घर के चारों तरफ हैज़ल की झाड़ी की हैज[18] लगी हुई है।"

भेड़िये ने सोचा "यह मीठी चीज़ तो मेरे लिये बड़ी ही स्वादिष्ट रहेगी। यह तो बल्कि अपनी नानी बुढ़िया से भी ज़्यादा स्वादिष्ट रहेगी। सो अगर मुझे इन दोनों को खाना है तो मुझे बहुत होशियारी से काम करना चाहिये।"

यह सोच कर वह थोड़ी दूर तक छोटी लाल टोपी के साथ चलता रहा फिर बोला — "छोटी लाल टोपी, देखो तो इन सुन्दर फूलों की तरफ देखो जो हमारे आस पास उगे हुए हैं। तुम उनको देखने के लिये क्यों नहीं जातीं? और मुझे लगता है कि तुम चिड़ियों का मीठा गाना भी जरूर ही सुन रही होगी।

[17] Oak trees are tall shady trees.

[18] Hedge is normally a low wall, 3-6 feet tall, otherwise it can be high also – as high as 10-12 feet, made of very densely planted plants. It works as a boundary wall to protect the house from thieves and animals etc – see the picture of a hedge above.

तुम तो इस रास्ते पर ऐसे चल रही हो जैसे कोई स्कूल जा रही हो। देखो न यह जंगल कितना सुन्दर लग रहा है। तुम इधर देखती क्यों नहीं?"

लाल टोपी ने अपनी ऑखें खोलीं और सूरज की किरनें पेड़ों के बीच से नाचती हुई जमीन पर पड़ती हुई देखीं। चारों तरफ फूल खिलते हुए देखे।

उसने सोचा कि अगर वह एक ताजे फूलों का गुच्छा अपनी नानी के लिये ले जाये तो उसकी नानी बहुत खुश हो जायेगी। अभी तो मेरे पास समय है मैं नानी के घर समय पर पहुॅच जाऊॅगी। और यह सोच कर वह फूल लेने के लिये सड़क छोड़ कर जंगल में भाग गयी।

हर बार जब वह एक फूल तोड़ती तो उसको लगता कि दूसरा फूल उससे ज़्यादा सुन्दर है सो वह दूसरा फूल तोड़ने पहुॅच जाती। इस तरह वह जंगल में दूर और दूर चलती चली गयी।

पर इस बीच भेड़िया सीधा नानी के घर जा पहुॅचा और जा कर उसके घर का दरवाजा खटखटाया।

"कौन है?"

"मैं हूॅ नानी छोटी लाल टोपी। मैं आपके लिये केक और शराब ले कर आयी हूॅ। दरवाजा खोलिये।"

"बस ताले को ज़रा सा दबा दो तो दरवाजा खुल जायेगा। मैं बहुत कमजोर हूॅ उठ नहीं सकती।"

भेड़िये ने ताला दबा दिया तो दरवाजा खुल गया। वह अन्दर घुसा, सीधा नानी के कमरे में गया और उसको खा लिया। फिर उसने नानी के कपड़े पहने, उसकी टोपी अपने सिर पर लगायी और परदे लगा कर उसके बिस्तर में छिप कर लेट गया।

उधर छोटी लाल टोपी सारे जंगल से उतनी देर तक फूल ही चुनती रही जब तक कि वह जितने फूल ले जा सकती थी उसने उतने फूल नहीं चुन लिये। फिर वह अपनी नानी के घर चली।

जब वह नानी के घर आयी तो यह देख कर उसको बड़ा आश्चर्य हुआ कि उनके घर का दरवाजा खुला पड़ा था। वह घर के अन्दर घुसी तो उसको वहॉ सब बड़ा अजीब लग रहा था।

उसको डर लगा तो उसने सोचा कि मुझे डर क्यों लग रहा है। मुझे तो नानी के घर में कभी डर नहीं लगता। मुझे तो यहॉ आ कर हमेशा ही बहुत अच्छा लगता है। आज क्या बात है।

वह नानी के बिस्तर के पास गयी और वहॉ के परदे खोले तो देखा कि नानी तो बिस्तर पर सोयी हुई थी। उनकी टोपी उनके चेहरे पर नीचे तक आयी हुई थी जो उसको बड़ी अजीब सी लगी। क्योंकि इस तरह से तो वह टोपी कभी नहीं पहनती थी।

उसने पूछा — "नानी आपके कान इतने बड़े क्यों हैं?"

भेड़िया बोला — "ताकि मैं तुमको अच्छी तरह सुन सकूॅ।"

लाल टोपी बोली — "नानी आपकी ऑखें इतनी बड़ी क्यों हैं?"

भेड़िया बोला — "ताकि मैं तुमको अच्छी तरह देख सकूॅ।"

ाल टोपी फिर बोली — "नानी आपके हाथ कितने बड़े हैं।"

भेड़िया बोला — "ताकि मैं तुमको ठीक से पकड़ सकूॅ बेटी।"

लाल टोपी बोली — "नानी आपका मुॅह कितने भयानक रूप से बड़ा है।"

भेड़िया बोला — "ताकि मैं तुमको अच्छी तरह से खा सकूॅ।"

यह कह कर वह भेड़िया पहले तो बिस्तर से नीचे कूद गया फिर लाल टोपी के ऊपर कूद गया और उसे खा गया।

जैसे ही भेड़िये ने उसको खा कर खत्म किया वह फिर से नानी के बिस्तर में जा कर लेट गया और खर्राटे मार कर गहरी नींद सो गया।

इत्तफाक से उधर से एक शिकारी जा रहा था। उसको मालूम था कि उस घर में एक बुढ़िया रहती है। उसने उस घर में से ज़ोर के खर्राटों की आवाज आती सुनी तो सोचा कि यह तो कुछ गडबड़ है क्योंकि एक बुढ़िया तो इतने ज़ोर से खर्राटे नहीं मार सकती। सो उसने उस घर को देखने का निश्चय किया।

वह घर के अन्दर घुसा तो उसने देखा कि वहॉ तो वह भेड़िया लेटा पड़ा है जिसको वह बहुत दिनों से ढूॅढ रहा था। उसने सोचा लगता है इस भेड़िये ने उस बुढ़िया को खा लिया है पर शायद उस बुढ़िया को अभी भी बचाया जा सकता है।

मैं इसको मारूँगा नहीं बल्कि अगर इसने उस बुढ़िया को खा लिया है तो मैं इसका पेट काट कर उस बुढ़िया को निकाल लूँगा सो उसने एक कैंची ली और उस भेड़िये का पेट काट दिया।

उसने केवल दो तीन जगह ही उसके पेट के ऊपर कैंची चलायी होगी कि उसको उसमें से लाल टोपी चमकती दिखायी दे गयी।

उसने उसका पेट थोड़ा सा और काटा तो उसमें से लाल टोपी कूद कर बाहर आ गयी और चिल्ला कर बोली — "मैं तो बहुत डर गयी थी। उस भेड़िये के शरीर के अन्दर कितना अँधेरा था।

उसके बाद उसमें से छोटी लाल टोपी की नानी भी ठीक से निकल आयी। तब छोटी लाल टोपी ने कुछ भारी पत्थर इकट्ठे किये और उनको भेड़िये के पेट में भर दिया।

जब वह सो कर उठा और उसने भागने की कोशिश की तो पत्थरों के बोझ की वजह से वह भाग नहीं सका और गिर कर मर गया।

तीनों बहुत खुश हुए। शिकारी उस भेड़िये को अपने घर ले गया। नानी ने वह केक खायी और शराब पी जो छोटी लाल टोपी ले कर आयी थी।

और छोटी लाल टोपी ने सोचा कि "मैं जब तक ज़िन्दा हूँ तब तक मैं रास्ता छोड़ कर जंगल में कभी नहीं जाऊँगी जब तक कि मेरी मॉ नहीं कहेगी।"

X X X X X X X

ऐसा भी कहते हैं कि एक बार किसी और समय लाल टोपी अपनी नानी के लिये कुछ बेक की हुई चीज़ें ले कर उसके घर जा रही थी तो एक दूसरा भेड़िया उसके पास आया और उसने उसको सड़क छोड़ने के लिये उकसाया पर छोटी लाल टोपी ने बड़ी सावधानी बरती और उसकी बात नहीं मानी और सीधी अपनी नानी के घर चली गयी।

वहॉ जा कर उसने अपनी नानी को बताया कि रास्ते में उसको एक भेड़िया मिला था। भेड़िये ने उसको गुड डे कहा और बड़े नीच ढंग से उसकी तरफ देखा। अगर वह लोगों के आने जाने वाली सड़क पर न होती तो शायद वह उसको खा ही जाता।

तो उसकी नानी बोली — "आजा अन्दर आजा बेटी तू अन्दर आजा। हम दरवाजा बन्द कर लेते हैं ताकि वह अन्दर न आ सके।"

पर जल्दी ही वह भेड़िया वहॉ आ गया और उसने दरवाजा खटखटाया और बोला — "नानी मॉ दरवाजा खोलो। मैं छोटी लाल टोपी हूॅ और मैं आपके लिये कुछ बेक की हुई चीज़ें ले कर आयी हूॅ।"

नानी और छोटी लाल टोपी दोनों घर में चुपचाप बैठे रहे और दरवाजा नहीं खोला। उस नीच भेड़िये ने उनके घर के कई चक्कर लगाये। जब किसी ने उसके लिये घर का दरवाजा नहीं खोला तो फिर आखिर वह उनके घर की छत पर चढ़ गया।

वह तब तक इन्तजार करना चाहता था जब तक शाम को छोटी लाल टोपी अपने घर नहीं चली जाती ताकि वह उसका पीछा कर सके और अँधेरे में उसको खा सके।

पर नानी को पता था कि वह क्या करने वाला था। सो उसने भी उसके लिये कुछ सोच लिया। उसके घर के सामने और छत के नीचे की तरफ पत्थर का एक बहुत बड़ा बक्सा रखा था।

नानी ने छोटी लाल टोपी से कहा — "ओ छोटी लाल टोपी, एक बालटी तो ले आना ज़रा। कल मैंने कुछ सौसेजेज़[19] बनाये थे। उस बालटी में वह पानी ले आना जिसमें मैंने उनको उबाला था और उसको इस पत्थर के बक्से में डाल दे।"

छोटी लाल टोपी ने ऐसा ही किया। सौसेजेज़ के पानी की खुशबू जब भेड़िये की नाक में पहुँची तो उसने चारों तरफ सूँघ सूँघ कर देखा तो वह रह नहीं सका और नानी की छत से फिसलने लगा और फिसल कर उस पत्थर के बक्से में जा गिरा।

गिर कर वह उसमें डूब गया और मर गया और छोटी लाल टोपी सुरक्षित अपने घर चली गयी।

[19] A sausage is a food usually made from ground meat with a skin around it. Typically, a sausage is formed in a casing traditionally made from intestine, but sometimes synthetic. Some sausages are cooked during processing and the casing may be removed after.

3 छोटी लाल टोपी–2[20]

छोटी लाल टोपी वाली लड़की जैसी यह लोक कथा यूरोप महाद्वीप के जर्मनी और पोलैंड देशों में कही सुनी जाती है।

एक बार एक बहुत ही सुन्दर लड़की रहती थी जिसको सब लोग बहुत प्यार करते थे पर उसकी नानी उसको सबसे ज़्यादा प्यार करती थी और उसकी समझ में यह नहीं आता था कि वह उसको अपना प्यार जताने के लिये क्या दे।

सो एक बार उसने उसके लिये एक भारी लाल सिल्क की टोपी बनायी और उसको पहनायी। वह टोपी उस पर इतनी अच्छी लगी कि वह अपने सिर पर उस टोपी के सिवा और कुछ पहनती ही नहीं थी। सो लोगों ने उसको लाल टोपी नाम दे दिया।

एक बार लाल टोपी की मॉ ने लाल टोपी से कहा — "यह लो एक केक लो और यह एक बोतल शराब लो। इनको अपनी नानी के पास ले जाओ। वह बीमार हैं और कमजोर हैं ये दोनों चीज़ें जा कर उनको देना। वह जब इन्हें खायेंगी तो ये उनको ताजा कर देंगी और वह अच्छा महसूस करेंगी।

---

[20] Little Red Hood – a folktale from Germany/Poland area, Europe.
Source – "Sixty Folk-Tales From Exclusively Slavonic Sources", by AH Wratislaw. 1889.
Taken from the Web Site : http://www.pitt.edu/~dash/type0333.html
It is available at : http://www.surlalunefairytales.com/ridinghood/stories/redhood.html also

और देखना वहॉ जा कर उनसे ठीक से बरताव करना। जब तुम उनके कमरे में जाओ तो उनके कमरे के सारे कोनों में झॉकना नहीं। और जाते ही पहले उनको गुड डे[21] बोलना।

सुन्दर तरीके से चलना और सड़क से इधर उधर नहीं जाना नहीं तो तुम गिर जाओगी और यह बोतल टूट जायेगी और फिर नानी के लिये कुछ नहीं बचेगा।"

लाल टोपी बोली — "मैं ऐसा ही करूँगी जैसा तुमने मुझसे कहा है।" कह कर उसने अपनी मॉ के हाथ के ऊपर अपना हाथ रख कर वायदा किया।

पर उसकी नानी जंगल में रहती थी और उनका घर उसके घर से आधा घंटे की दूरी पर था। जब लाल टोपी जंगल में घुसने लगी तो वहॉ उसको एक भेड़िया मिला पर वह यह नहीं जानती थी कि भेड़िया कितना नीच जंगली जानवर था इस लिये वह उससे डरी भी नहीं।

भेड़िया उससे बोला — "भगवान तुम्हारी सहायता करे लाल टोपी।"

लाल टोपी बोली — "भगवान तुम्हारा भी भला करे ओ भेड़िये।"

भेड़िया बोला — "आज तुम इतनी जल्दी कहॉ चलीं?"

[21] Good Day – a normal greeting in English language as Good Morning and Good Evening.

लाल टोपी बोली — "नानी के पास।"

भेड़िये ने पूछा — "और यह तुम्हारे ऐप्रन के नीचे क्या है?"

लाल टोपी बोली — "केक और शराब। ये हमने कल ही बेक किये थे। बूढ़ी नानी को एक बार तो अच्छा खाना मिलना ही चाहिये न ताकि उनको ताकत आ सके।"

भेड़िया बोला — "तुम्हारी नानी रहती कहॉ है?"

"यहॉ से पन्द्रह मिनट की दूरी पर जंगल में तीन ओक के पेड़ों के नीचे। वे पेड़ तुमको वहॉ आसानी से दिखायी दे जायेंगे।"

भेड़िये ने अपने मन में सोचा "यह सुन्दर लड़की तो बहुत ही स्वादिष्ट कौर है। यह तो अपनी नानी से भी ज़्यादा स्वादिष्ट होगी। अगर मुझे दोनों को खाना है तो मुझे होशियारी से काम लेना पड़ेगा।"

कुछ देर तक तो भेड़िया लाल टोपी के साथ साथ चलता रहा फिर बोला — "लाल टोपी ज़रा देखो तो। यहॉ कितने सारे फूल लगे हुए हैं। तुम इनको देख कर आओ न।

मुझे तो ऐसा लग रहा है कि तुमको तो चिड़ियों का गाना भी सुनायी नहीं पड़ रहा है। तुम तो इतनी उदास जा रही हो जैसे कोई स्कूल जा रहा हो जबकि देखो न जंगल तो कितना खुश है।"

तब लाल टोपी ने अपनी ऑखें उठा कर इधर उधर देखा तो देखा कि सूरज की किरनें पेड़ों से छन छन कर चमक रही थीं। सारी जगह फूल खिले हुए थे।

उसने सोचा कि अगर मैं कुछ फूल अपनी नानी के लिये ले जाऊॅ तो नानी बहुत खुश हो जायेंगी। और फिर अभी तो कोई देर भी नही हुई है मैं समय से घर पहुॅच जाऊॅगी। सो वह जंगल में चल दी।

वहॉ उसने फूल इकट्ठे करने शुरू किये। जब वह एक फूल तोड़ती तो उसको लगता कि दूसरा तो उससे भी ज़्यादा सुन्दर है और फिर वह उसको तोड़ने के लिये भाग जाती। इस तरह से वह जंगल के अन्दर तक घुसती चली गयी।

पर इस बीच भेड़िया वहॉ से सीधा उसकी नानी के घर चला गया। नानी के घर जा कर उसने उसका दरवाजा खटखटाया।

नानी ने पूछा — "कौन है?"

भेड़िया बोला — "मैं हूॅ नानी छोटी लाल टोपी। मैं तुम्हारे लिये केक और शराब ले कर आयी हूॅ। दरवाजा खोलो।"

नानी जोर से बोली — "बस ताले को ज़रा सा दबा दो तो दरवाजा खुल जायेगा। मैं बहुत कमजोर हूॅ मैं खड़ी नहीं हो सकती।"

भेड़िये ने ताले को ज़रा सा दबा दिया तो दरवाजा खुल गया और भेड़िया बिना एक शब्द कहे नानी के बिस्तर के पास अन्दर चला गया और उसको खा लिया।

फिर उसने लाल टोपी की नानी के कपड़े निकाले, उनको पहना, उसकी टोपी भी अपने सिर पर लगायी और परदे खींच कर नानी के बिस्तर में ही लेट गया।

इस बीच लाल टोपी फूलों के पीछे भागती रही जब तक कि उसके पास इतने सारे फूल नहीं हो गये कि वह अब और नहीं ले जा सकती थी।

फिर उसको अपनी नानी की याद आयी तो वह अपनी नानी के घर चली। घर आ कर उसने देखा कि घर का दरवाजा तो खुला पड़ा है। यह उसको बड़ा अजीब लगा।

वह घर में घुसी तो भी उसको कुछ अजीब सा लग रहा था। वह सोचने लगी कि आज यहॉ उसको सब कुछ अजीब सा क्यों लग रहा है। उसको तो नानी के पास आ कर हमेशा ही अच्छा लगता है।

वह अन्दर तक चली गयी और बोली — "गुड डे नानी।"

पर उसे उसका कोई जवाब नहीं मिला।

फिर वह नानी के बिस्तर के पास गयी और उसके परदे खींचे तो देखा कि वहॉ तो उसकी नानी लेटी हुई थी। उसकी टोपी उसकी ऑखों तक आयी हुई थी और वह दिखायी भी बहुत अजीब दे रही थी।

लाल टोपी ने पूछा — "नानी आपके कान इतने लम्बे क्यों हैं?"

नानी बोली — "ताकि मैं तुमको ज़्यादा अच्छी तरह से सुन सकूँ।"

लाल टोपी ने फिर पूछा — "नानी आपकी ऑखें इतनी बड़ी क्यों हैं?"

नानी ने फिर जवाब दिया — "ताकि मैं तुमको ज़्यादा अच्छी तरह से देख सकूँ।"

लाल टोपी ने फिर पूछा — "नानी आपके हाथ इतने बड़े क्यों हैं?"

नानी बोली — "ताकि मैं तुमको ठीक से पकड़ सकूँ।"

लाल टोपी ने फिर कुछ परेशान हो कर पूछा — "पर नानी आपका मुँह इतना बड़ा क्यों है?"

नानी ने जवाब दिया — "ताकि मैं तुम्हें ठीक से खा सकूँ।"

यह कह कर वह भेड़िया बिस्तर से लाल टोपी के ऊपर कूद पड़ा और उसे खा गया। लाल टोपी को खा कर वह फिर से नानी के बिस्तर में लेट गया और ज़ोर ज़ोर से खर्राटे मारने लगा। उसके खर्राटों की आवाज बाहर तक जा रही थी।

उधर से एक शिकारी जा रहा था। उसने सोचा एक बुढ़िया इस तरह से खर्राटे कैसे मार सकती है देखूँ तो ज़रा क्या मामला है। सो वह नानी के घर में घुसा और सीधा उसके कमरे में गया। वहॉ जा कर उसने नानी के बिस्तर में देखा तो देखा कि वहॉ तो भेड़िया लेटा हुआ था।

उसको देखते ही शिकारी बोला — "तो ओ नीच यह तुम हो? मैं तो तुम्हें कितने समय से ढूँढ रहा था। आज तुम मुझे मिले हो।"

कह कर वह अपनी बन्दूक का निशाना उसकी तरफ लगाने ही वाला था कि उसने सोचा शाद इसने नानी को खा लिया है और उसको अभी भी इसके पेट से निकाला जा सकता है।

सो उसने उसको गोली नहीं मारी बल्कि अपनी बन्दूक नीचे रख दी और एक चाकू निकाल लिया। चाकू से उस सोये हुए भेड़िये का पेट चीर दिया। जब उसने चाकू से उसके पेट को कई बार काट दिया तो उसमें से उसको लाल रंग की टोपी चमकती दिखायी दी।

एक दो बार और काटने पर तो छोटी लाल टोपी उसमें से बाहर कूद पड़ी और बोली — "ओह मैं तो कितना डर गयी थी। भेड़िये के पेट में तो कितना अँधेरा था।"

इसके बाद नानी भी निकल आयी। वह अभी तक ज़िन्दा थी पर बड़ी मुश्किल से सॉस ले पा रही थी

लाल टोपी जल्दी से कुछ बडे बड़े पत्थर ले आयी जिनको उसने भेड़िये के पेट में भर दिया। जब भेड़िया जागा और उसने बिस्तर में से बाहर कूदना चाहा तो उन भारी पत्थरों की वजह से वह कूद ही नहीं पाया और वहीं गिर कर मर गया।

अब तीनों खुश थे। शिकारी भेड़िये की खाल ले गया। नानी ने वह केक खायी और शराब पी जो लाल टोपी ले कर आयी थी। उनको खा पी कर नानी फिर से ठीक और तन्दुरुस्त हो गयी।

और छोटी लाल टोपी ने सोचा कि जब तक मॉ ने मना किया है और मैं ज़िन्दा हूॅ मैं सड़क छोड़ कर जंगल में कभी नहीं जाऊॅगी।

4 नानी[22]

लाल टोपी वाली लड़की जैसी लोक कथाओं की इस पुस्तक में यह कथा यूरोप के फ़्रांस देश में कही सुनी जाती है।

एक बार एक स्त्री थी जिसने एक दिन डबल रोटी बनायी। उसने अपनी बेटी से कहा — "जा यह डबल रोटी और यह एक बोतल दूध अपनी नानी को दे आ।" सो वह छोटी लड़की उन दोनों चीज़ों को ले कर अपनी नानी के घर चल दी।

चलते चलते वह एक ऐसी जगह आयी जहॉ से वह सड़क दो तरफ जाती थी। वहॉ उस लड़की को एक वीयरवुल्फ़[23] मिला। उसने लड़की से पूछा — "तुम कहॉ जा रही हो?"

लड़की बोली — "मैं एक गरम डबल रोटी और एक शीशी दूध अपनी नानी को देने के लिये ले कर जा रही हूँ।"

---

[22] Grandmother – a folktale from France, Europe.
Source – Conte de la mère-grand, from a Web Site sponsored by the Bibliothèque nationale de France. Translated by DL Ashliman. 2007.
This version is taken from the Web Site : http://www.pitt.edu/~dash/type0333.html
This story was collected by folklorist Achille Millien (1838-1927) in the French province of Nivernais, in about 1870.

[23] Werewolf is a mythological or folkloric human with the ability to shapeshift into a wolf or a therianthropic hybrid wolf-like creature, either purposely or after being placed under a curse or affliction (eg, via a bite or scratch from another werewolf). This normally happens on Full Moon night. This is very common in Western world – Europe and North America continents – see its picture above.

वीयरवुल्फ़ ने फिर पूछा — "तुम कौन से रास्ते से जाओगी — पिन वाले रास्ते से या सुइयों वाले रास्ते से?"

छोटी लड़की बोली — "मैं सुइयों वाले रास्ते से जाऊँगी।"

वीयरवुल्फ़ बोला — "बहुत अच्छे। मैं तो पिनों वाले रास्ते से जाऊँगा।"

उस छोटी लड़की को सुइयॉ इकट्ठी करना बहुत अच्छा लगता था। वीयरवुल्फ़ ने अपना पिनों वाला रास्ता पकड़ा और उस लड़की की नानी के घर उस लड़की से पहले ही आ पहुँचा।

वहॉ आ कर उसने उस लड़की की नानी को मार दिया। उसने उसका थोड़ा सा मॉस रसोईघर की आलमारी में रख दिया और उसका एक बोतल खून एक दूसरी आलमारी में रख दिया।

कुछ देर बाद ही वह छोटी लड़की वहॉ आ गयी। उसने आ कर घर का दरवाजा खटखटाया तो वीयरवुल्फ़ बोला — "दरवाजे को जोर से धक्का मारो दरवाजा तभी खुलेगा क्योंकि उसके पीछे एक पानी की बालटी रखी है।"

वह छोटी लड़की दरवाजे को धक्का मार कर अन्दर आयी और बोली — "गुड डे नानी। मैं आपके लिये एक गरम गरम डबल रोटी और एक बोतल दूध ले कर आयी हूँ।"

"रसोईघर की आलमारी में रख दे बेटी। वहॉ कुछ मॉस रखा है वह खा ले और दूसरी आलमारी में शराब की बोतल रखी है उसमें से शराब पी ले।"

जब वह लड़की खा रही थी तो एक बिल्ला वहॉ बैठा था वह बोला — "यह बड़े शरम की बात है कि यह नीच लड़की अपनी नानी का मॉस खा रही है और उसी का खून पी रही है।"

उधर वीयरवुल्फ़ बोला — "बेटी कपड़े उतार दे और मेरे पास आ कर मेरे बिस्तर में लेट जा।"

लड़की ने पूछा — "मैं अपना ऐप्रन कहॉ रखूँ नानी?"

"उसको तू आग में फेंक दे क्योंकि अब तुझे उसकी जरूरत नहीं पड़ेगी।"

इस तरह से वीयरवुल्फ़ ने उसके सारे कपड़े – उसकी पोशाक, उसके जूते, उसका पेटीकोट सब उतरवा दिये। फिर जिस किसी कपड़े के लिये भी उसने पूछा कि "मैं इसको कहॉ रखूँ" उन सबको उसने यह कह कर आग में फिंकवा दिया कि "अब तुझे इनकी कोई जरूरत नहीं पड़ेगी।"

अपने कपड़े उतार कर वह लड़की उस वीयरवुल्फ़ के साथ उसके बिस्तर में घुस गयी तो वह बोली — "ओह नानी आप तो कितने बालों वाली हैं।"

वीयरवुल्फ़ बोला — "बेटी ये बाल अपने आपको गरम रखने के लिये हैं।"

लड़की बोली — "ओह नानी आपके नाखून कितने लम्बे हैं।"

वीयरवुल्फ़ बोला — "ताकि मैं अपने आपको ठीक से खुजा सकूँ।"

लड़की फिर बोली — "नानी आपके कंधे कितने बड़े हैं।"

वीयरवुल्फ़ बोला — "बेटी ताकि मैं आग जलाने वाली लकड़ी आसानी से ला सकूँ।"

लड़की बोली — "आपके तो कान भी कितने बड़े हैं नानी।"

वीयरवुल्फ़ बोला — "ताकि मैं ठीक से सुन सकूँ मेरी बेटी।"

लड़की बोली — "और नानी आपकी तो नाक भी बहुत बड़ी है।"

वीयरवुल्फ़ बोला — "ताकि में अपना तम्बाकू ठीक से सूँघ सकूँ।"

लड़की बोली — "नानी आपका तो मुँह भी बहुत बड़ा है।"

वीयरवुल्फ़ बोला — "ताकि मैं तुमको अच्छी तरह से खा सकूँ।"

लड़की बोली — "नानी मुझे छोटा काम करने बाहर जाना है।"

वीयरवुल्फ़ बोला — "यहीं बिस्तर में कर लो।"

लड़की बोली — "नहीं नानी, मुझे तो बाहर ही करना है।"

वीयरवुल्फ़ बोला — "ठीक है पर देखना बहुत देर नहीं लगाना।"

वीयरवुल्फ़ ने एक ऊनी धागा उसके पैर में बाँध दिया और उसका दूसरा सिरा अपने हाथ में पकड़ लिया और उसको बाहर जाने दिया।

जैसे ही वह छोटी लड़की बाहर पहुॅची उसने उस ऊन का सिरा बाहर ऑगन में लगे एक आलूबुखारे के पेड़ से बॉध दिया और अपने घर भाग गयी।

जब कुछ देर हो गयी और वह लड़की वापस नहीं आयी तो वीयरवुल्फ़ को चिन्ता लगी। उसने उसको आवाज लगायी — "क्या तुम बहुत सारा कर रही हो?"

कई बार पुकारने पर भी जब उसे कोई जवाब नहीं मिला तो वह अपने बिस्तर से कूद कर उस लड़की के पीछे भागा पर वह उस के घर पर तभी पहुॅचा जब वह अपने घर के अन्दर घुस चुकी थी।

5 नकली नानी[24]

लाल टोपी वाली जैसी यह लोक कथा यूरोप महाद्वीप के इटली देश की लोक कथाओं से ली गयी है। इसमें भेड़िया का काम एक जादूगरनी करती है।

एक बार एक मॉ को आटा छानना था पर उसके पास आटा छानने के लिये चलनी नहीं थी। उसने अपनी बेटी को अपनी मॉ के घर चलनी लाने के लिये भेजा।

बच्ची ने अपने लिये कुछ खाना बॉधा – एक अॅगूठी की शक्ल वाली डबल रोटी और थोड़ा सा तेल, और वह अपनी नानी के घर से चलनी लाने चल दी।

उसकी नानी के घर के रास्ते में जोरडन नदी[25] पड़ती थी। जब वह जोरडन नदी के पास पहुॅची तो उससे बोली — "ओ जोरडन नदी, मुझे नदी पार करने दो।"

जोरडन नदी बोली — "अगर तुम मुझे अपनी अॅगूठी की शक्ल वाली डबल रोटी दो तो मैं तुमको नदी पार करने दूॅगी।" जोरडन

[24] False Grandmother (Story No 116) – a folktale from Abruzzo area, Italy, Europe.
Adapted from the book : "Italian Folktales", by Italo Calvino. Translated by George Martin in 1980.
[25] Jordan River

नदी को अँगूठी की शक्ल वाली डबल रोटी बहुत अच्छी लगती थी। वह उसको अपने भँवर में घुमा घुमा कर खाती थी।

सो बच्ची ने अपनी अँगूठी की शक्ल वाली डबल रोटी नदी में फेंक दी। उस डबल रोटी को नदी में फेंकते ही नदी का पानी नीचे उतर गया और वह बच्ची उस नदी को पार कर गयी।

चलते चलते वह बच्ची रेक दरवाजे के पास पहुँची तो बोली — "रेक गेट, रेक गेट, मुझे अपने अन्दर से जाने दोगे?"

रेक गेट बोला — "हाँ हाँ क्यों नहीं, पर अगर तुम मुझे तेल के साथ डबल रोटी खाने के लिये दो तो।" रेक गेट को तेल के साथ डबल रोटी बहुत अच्छी लगती है।

क्योंकि उसके कब्जे[26] बहुत जंग लगे थे और जब वह तेल लगी डबल रोटी खाता था तो उसके कब्जे बहुत आसानी से चलने लगते थे। सो बच्ची ने उसको भी थोड़ी सी डबल रोटी और तेल दिया और रेक गेट ने उसको अपने अन्दर से जाने दिया।

अब वह अपनी नानी के घर पहुँच गयी थी। पर उसके घर का दरवाजा बहुत कस के बन्द था सो वह बाहर से ही चिल्लायी — "नानी नानी, दरवाजा खोलो। यह मैं हूँ। मुझे अन्दर आने दो।"

[26] Translated for the word "Hinges" – see its picture above.

अन्दर से नानी की आवाज आयी — "बेटी, मैं बीमार पड़ी हूॅ तुम खिड़की से अन्दर आ जाओ।"

बच्ची बोली — "नानी, मैं खिड़की से अन्दर नहीं आ सकती। खिड़की बहुत ऊॅची है।"

नानी फिर बोली — "तो फिर बिल्ली के अन्दर आने के दरवाजे से अन्दर आ जाओ।"

बच्ची बोली — "बिल्ली के अन्दर आने का दरवाजा तो बहुत ही छोटा है नानी। मैं उसके अन्दर तो घुस ही नहीं सकती।"

"तब फिर ज़रा रुको।" कह कर उसकी नानी ने एक रस्सी नीचे गिरा दी और उससे उस बच्ची को खिड़की से ऊपर खींच लिया।

कमरे में अॅधेरा था सो वह बच्ची यह देख नहीं पायी कि उसको किसने ऊपर खींचा। असल में उस कमरे में उसकी नानी की बजाय एक जादूगरनी[27] लेटी हुई थी।

उस जादूगरनी ने उसकी नानी को एक ही कौर में निगल लिया था। वह उसके दॉत नहीं खा पायी थी क्योंकि वे उसकी नानी ने एक बरतन में रख दिये थे। जादूगरनी ने उनको उबलने के लिये एक बरतन में रख दिया।

बच्ची अन्दर आ कर बोली — "नानी नानी, मॉ ने चलनी मॅगायी है।"

[27] Translated for the word "Ogress"

जादूगरनी बोली — "बेटी, अब तो बहुत देर हो चुकी है। अब मैं वह तुमको कल दूँगी। आओ अब तुम सो जाओ।"

बच्ची बोली — "पर नानी मुझको बहुत भूख लगी है। पहले मुझे खाना चाहिये।"

जादूगरनी बोली — "देखो तो एक बरतन में बीन्स उबल रही हैं तुम वह खा लो।" पर उस बरतन में तो नानी के दॉत उबल रहे थे।

बच्ची ने उस बरतन को इधर उधर हिलाया तो बोली — "नानी ये बीन्स तो बहुत सख्त हैं।"

जादूगरनी बोली — "तो फिर कड़ाही में से पकौड़े निकाल कर खा लो।"

अब कड़ाही में तो नानी के कान थे। बच्ची ने उनमें कॉटा घुसा कर देखा तो बोली — "पर नानी ये तो करारे नहीं हैं बहुत ही मुलायम हैं।"

जादूगरनी बोली — "तो फिर तुम अब तुम सो जाओ कल खा लेना।"

यह सुन कर वह बच्ची अपनी नानी के पास उसके बिस्तर में घुस गयी। उसने नानी का एक हाथ छुआ तो बोली — "नानी तुम्हारा हाथ इतना सारे बालों वाला क्यों है?"

जादूगरनी बोली — "क्योंकि मेरी उॅगलियों में बहुत सारी अॅगूठियॉ हैं।"

फिर उसने नानी की छाती पर हाथ रखा तो वह बोली — "नानी तुम्हारी तो छाती पर भी इतने सारे बाल है?"

जादूगरनी बोली — "हॉ बेटी, क्योंकि मैंने अपने गले में बहुत सारी मालाऐं पहन रखी हैं।"

फिर उसने नानी के होठ छुए और बोली — "नानी तुम्हारे होठों पर इतने सारे बाल क्यों हैं?"

जादूगरनी फिर बोली — "क्योंकि मैंने अपने कपड़े बहुत कसे हुए पहन रखे हैं।"

इसके बाद उसके हाथ में नानी की पूॅछ आ गयी तो उसको लगा कि ये बाल हों या न हों पर नानी की पूॅछ तो कभी थी ही नहीं। उनकी यह पूॅछ कहॉ से आ गयी। लगता है कि यह मेरी नानी नहीं बल्कि जादूगरनी है, और कोई नहीं।

सो वह बोली — "नानी मैं तब तक नहीं सो सकती जब तक मैं अपना छोटा काम[28] न कर आऊॅ।"

जादूगरनी बोली — "तो जाओ नीचे जानवरों के बाड़े में चली जाओ।" यह कह कर उसने बच्ची को नीचे बाड़े में उतार दिया। जैसे ही वह बच्ची नीचे बाड़े में उतरी उसने अपनी रस्सी खोली और उसमें एक बकरी बॉध दी।

[28] To urinate

कुछ मिनट बाद नानी ने पूछा — "तुम्हारा छोटा काम हो गया?"

बच्ची ने भी जब बकरी के गले में रस्सी बॉध दी तो वह बोली — "हॉ नानी मेरा काम हो गया। बस अब तुम मुझे ऊपर खींच लो।"

जादूगरनी ने रस्सी ऊपर खींचनी शुरू की तो वह बच्ची चिल्लाने लगी — "बालों वाली जादूगरनी, बालों वाली जादूगरनी।" उसने बाड़े का दरवाजा खोला और वहॉ से भाग ली।

उधर जादूगरनी रस्सी खींचती रही तो वहॉ तो बच्ची की जगह एक बकरी आ गयी। बच्ची की जगह बकरी को देख कर वह जादूगरनी अपने बिस्तर से कूदी और बच्ची के पीछे भागी।

भागते भागते बच्ची रेक गेट के पास पहुॅची तो जादूगरनी चिल्लायी — "ओ रेक दरवाजे, इस लड़की को इस दरवाजे से बाहर नहीं जाने देना।"

रेक गेट बोला — "मैं तो इसको जाने दूॅगा क्योंकि इसने मुझे खाने के लिये तेल के साथ डबल रोटी दी है।" और वह बच्ची उस गेट से बाहर निकल गयी।

आगे चल कर बच्ची जोरडन नदी के पास पहुॅची तो जादूगरनी फिर पीछे से चिल्लायी — "ओ जोरडन नदी, इस लड़की को पार नहीं उतरने देना।"

पर जोरडन नदी बोली — "मैं तो इसको उस पार जाने दूँगी क्योंकि इसने मुझे खाने के लिये अँगूठी की शक्ल वाली डबल रोटी दी है।" और उसने भी बच्ची को पार जाने दिया। इस तरह वह बच्ची दरवाजा और नदी दोनों पार कर गयी।

पर जब जादूगरनी जोरडन नदी पार करने लगी तो उसने अपना पानी नीचे नहीं किया और वह जादूगरनी उस नदी के पानी के बहाव में बह गयी।

बच्ची दूसरे किनारे पर खड़ी खड़ी उसको मुँह बना बना कर चिढ़ाती रही। इस तरह से बच्ची ने जोरडन नदी और रेक गेट की सहायता करके अपने आपको बचा लिया और जादूगरनी को मार दिया।

6 छोटी सुनहरी टोपी का सच्चा इतिहास[29]

लाल टोपी वाली लड़की की यह लोक कथा यूरोप के फ़्रांस देश में कही सुनी जाती है। क्योंकि यह कथा कई तरह से कही सुनी जाती है इससे यह कथा यह बताती है कि उसकी असली कहानी क्या है।

तुमको उस बेचारी लाल टोपी वाली की कहानी तो मालूम ही होगी जिसको एक भेड़िये ने धोखा दिया था और फिर उसने उसको उसकी केक और छोटे मक्खन के डिब्बे और नानी के साथ मार डाला था।

पर जैसा कि हम अभी देखेंगे सच्ची कहानी उससे बिल्कुल अलग है। पहली बात तो यह है कि वह छोटी लड़की सुनहरी टोपी वाली कहलाती थी लाल टोपी वाली नहीं और अभी भी वह इसी नाम से जानी जाती है।

दूसरी बात यह कि कहानी के आखीर में न तो वह लड़की और न ही उसकी नानी मारे जाते हैं बल्कि वह नीच भेड़िया ही पकड़ा जाता है और मारा जाता है। तो अब सुनो तुम यह कहानी।

यह कहानी कुछ ऐसे शुरू होती है। एक बार की बात है कि एक किसान की लड़की थी – सुन्दर और सितारे की तरह

---

[29] The True History of Little Golden Hood – a folktale from France, Europe. By Charles Marelles.
Source – "The Red Fairy Book", by Andrew Lang, 5th ed. 1895.
Andrew Lang's source – Charles Marelles.
This tale is taken from the Web Site : http://www.pitt.edu/~dash/type0333.html

चमकीली। उसका असली नाम ब्लैन्चैट[30] था पर अक्सर लोग उसको छोटी सुनहरी टोपी[31] कह कर बुलाते थे क्योंकि वह हमेशा एक सुनहरे पीले रंग की टोपी वाला क्लोक[32] ओढ़े रहती थी।

यह क्लोक उसको उसकी नानी ने उसको उसके लिये अच्छा भाग्य[33] लाने के लिये दिया था। यह क्लोक धूप की एक किरन से बनाया गया था। उसकी यह नानी इतनी बूढ़ी थी कि उसको अपनी उम्र का ही पता नहीं था।

क्योंकि इस बुढ़िया को लोग जादूगरनी[34] समझते थे इसलिये लोग छोटी सुनहरी टोपी को भी जादूगरनी समझते थे। और ऐसा ही था भी जैसा कि तुम आगे चल कर देखोगे।

एक दिन मॉ ने अपनी बच्ची से कहा — "आज देखते हैं कि मेरी सुनहरी टोपी अपना रास्ता अपने आप ढूँढ पाती है या नहीं। ले बेटी यह केक का टुकड़ा कल तू अपनी नानी के लिये रविवार के खाने के लिये ले कर जाना।

---

[30] Blanchette – name of the Red Riding Hood

[31] Little Golden Hood

[32] Cloak is a cloth worn on both shoulders to cover oneself, to save from cold or for decoration. It may be heavy or light (not very light), embroidered or plain, long or short, of any type of cloth with or without hood. It is an elegant wearing. See its picture above.

[33] Translated for the words "Good Luck"

[34] Translated for the word "Witch"

जा कर तू उनसे पूछना कि वह कैसी हैं और यह केक का टुकड़ा उनको दे कर वहॉ से तुरन्त ही चली आना। रास्ते में किसी ऐसे आदमी से बात करने नहीं लग जाना जिसको तू जानती न हो। समझ गयी न?"

ब्लैन्चैट ने खुश हो कर कहा "मैं समझ गयी।" और बड़ी शान से केक ले कर अपने काम पर चल दी।

पर उसकी नानी एक दूसरे गॉव में रहती थी और वहॉ पहुॅचने के लिये एक बड़ा जंगल पार करना पड़ता था। जहॉ सड़क जंगल की तरफ मुड़ती थी वहॉ पहुॅचने पर उसको कुछ आवाज सुनायी दी तो वह बोली — "कौन है उधर?"

"दोस्त भेड़िया।"

भेड़िये ने बच्ची को अकेले जाते देख लिया था सो वह उसको मारने का इन्तजार कर रहा था। पर उसी समय उसने यह भी देख लिया था कि वहॉ जंगल में कुछ लकड़हारे लकड़ी काट रहे थे सो उसने अपना प्लान बदल दिया था।

अब बजाय इसके कि वह ब्लैन्चैट पर उसको मारने के लिये कूदता वह उसके पास एक अच्छे कुत्ते की तरह दुम हिलाता हुआ आया और बोला — "ओह तो यह तुम हो मेरी अच्छी सुनहरी टोपी।"

यह सुन कर वह लड़की उस भेड़िये से बात करने के लिये रुक गयी जिसको वह बिल्कुल भी नहीं जानती थी। वह फिर बोली — तो तुम मुझे जानते हो। तुम्हारा नाम क्या है?"

भेड़िया बोला — "मेरा नाम दोस्त भेड़िया है। और इस तरह तुम कहॉ जा रही हो अपनी बॉह पर यह छोटी सी टोकरी लटकाये?"

ब्लैन्चैट बोली — "मैं अपनी नानी के घर जा रही हूॅ उनको कल रविवार के खाने के लिये यह केक देने के लिये।"

"और तुम्हारी नानी रहती कहॉ है?"

ब्लैन्चैट बोली — "वह जंगल के उस पार जो गॉव है न, उसमें हवा की चक्की के पास पहले वाले घर में ही रहती हैं।"

भेड़िया बोला — "हॉ हॉ अब मैं समझा। अरे मैं भी तो वहीं जा रहा हूॅ। तुम्हारी टॉगें तो बहुत छोटी छोटी हैं न इसी लिये इसमें कोई शक नहीं कि मैं तो तुमसे पहले ही वहॉ पहुॅच जाऊॅगा। तुमको वहॉ पहुॅचने में थोड़ी देर लगेगी। मैं उनको जा कर बता दूॅगा कि तुम आ रही हो तो फिर वह तुम्हारा इन्तजार करेंगी।"

इतना कह कर भेड़िया जंगल में भाग गया और पॉच मिनट में ही नानी के घर आ पहुॅचा। वहॉ जा कर उसने नानी के घर का दरवाजा खटखटाया "ठक ठक"।

किसी ने कोई जवाब नहीं दिया तो उसने फिर और ज़ोर से दरवाजा खटखटाया पर फिर भी किसी ने कोई जवाब नहीं दिया।

तो फिर वह अपने पिछले पैरों पर खड़ा हुआ और उसने अपने आगे के पैर ताले पर रख कर ताला खोल लिया। वह अन्दर पहुॅचा तो उसने देखा कि वहॉ तो कोई भी नहीं था।

उस दिन वह बुढ़िया गॉव में अपने पत्ते[35] बेचने के लिये बहुत जल्दी उठ गयी थी। और वह तो इतनी जल्दी में चली गयी थी कि उसने अपना बिस्तर भी ठीक नहीं किया था और वह अपनी रात को पहनने वाली टोपी भी तकिये पर ही रखी भूल गयी थी।

भेड़िये ने सोचा "यह मैंने अच्छा किया कि मैं इतनी जल्दी आ गया। अब मैं जानता हूॅ कि मुझे क्या करना है।"

उसने घर का दरवाजा बन्द किया। उसने नानी की टोपी पहन कर उसको अपनी ऑखों के नीचे तक खिसका ली और परदे खींच कर नानी के बिस्तर में लेट गया।

इस बीच ब्लैन्चैट धीरे धीरे चलती रही और जैसा कि छोटे बच्चे करते हैं वह कभी इधर से कोई फूल तोड़ लेती तो कभी उधर से ऐस्टर के फूल तोड़ लेती। कभी वह उन तितलियों के पीछे भाग लेती जो धूप में इधर उधर घूम रही थीं तो कभी चिड़ियों को घोंसले बनाते देख लेती।

[35] Translated for the word "Herbs"

यह सब करते करते वह नानी के घर के दरवाजे पर आ पहुॅची और दरवाजा खटखटाया "ठक ठक"।

भेड़िये ने अपनी भर्रायी हुई आवाज को बहुत मुलायम बनाते हुए पूछा — "कौन है?"

"मैं हूॅ नानी, आपकी छोटी सुनहरी टोपी। मैं आपके लिये कल रविवार के खाने के लिये केक ले कर आयी हूॅ।"

"तुम अपनी उॅगली ताले पर रखो और दरवाजे को धक्का मारो तो दरवाजा खुल जायेगा।"

लड़की ने उसी तरह अपनी उॅगली ताले पर रख कर दरवाजा खोल लिया और अन्दर आते हुए बोली — "नानी क्या आपको जुकाम हुआ है?"

भेड़िये ने खॉसने का बहाना करते हुए कहा — "ओह हॉ थोड़ा सा। दरवाजा ठीक से बन्द कर देना। अपनी टोकरी मेज पर रख दो और अपनी फ्राक उतार कर मेरे पास आ कर लेट जाओ। तुम बहुत दूर से आ रही हो थक गयी होगी थोड़ा आराम कर लो।"

लड़की ने अपने कपड़े उतारे पर देखो तो उसकी होशियारी, उसने अपनी टोपी अपने सिर पर से नहीं उतारी। उसको उसने अपने सिर पर ही रहने दिया। वह उसको बहुत पसन्द थी न।

फिर वह नानी के बिस्तर में घुस गयी। पर जब उसने अपनी नानी को बिस्तर में देखा तो उसको उनकी शक्ल देख कर बड़ा आश्चर्य हुआ। पहले तो वह ऐसी नहीं हुआ करती थीं।

वह चिल्लायी — "नानी आप दोस्त भेड़िये की तरह से क्यों दिखायी दे रही हैं।"

भेड़िया बोला — "क्योंकि मैंने अपनी रात वाली टोपी पहन रखी है।"

लड़की फिर बोली — "पर नानी आपकी तो बॉहें भी बहुत बाल वाली हैं।"

भेड़िया बोला — "ताकि मैं तुम्हें ज़्यादा अच्छी तरह से गले लगा सकूॅ।"

लड़की बोली — "और नानी आपकी तो जीभ भी बहुत लम्बी है।"

भेड़िया बोला — "ताकि मैं ज़्यादा अच्छी तरीके से जवाब दे सकूॅ।"

लड़की बोली — "और आपका मुॅह भी तो कितने सफेद और बड़े बड़े दॉतों से भरा हुआ है।"

भेड़िया बोला — "ये तो छोटे बच्चों को चबाने के लिये हैं।"

यह कह कर भेड़िये ने बच्ची को खाने के लिये अपना बड़ा सा मुॅह खोल दिया पर वह पीली टोपी अपना सिर नीचे रख कर रो पड़ी और चिल्लायी — "मम्मी मम्मी।"

इससे भेड़िये के मुॅह में उस लड़की की केवल पीली टोपी ही आयी। उसके बाद तो वह "ओह मेरी प्यारी बेटी" कहता हुआ

पीछे की तरफ को हट गया। उसे लगा कि जैसे उसने लाल जलते हुए अंगारे मुॅह में रख लिये हों।

यह उस लड़की की पीले और लाल आग जैसे रंग की टोपी थी जिसने उस भेड़िये की जीभ गले तक जला दी थी। सो उसकी वह छोटी सी पीली टोपी वह जादुई टोपी थी जो लोग उस समय की कहानियों में गायब होने और दूसरों से बचने के लिये पहना करते थे।

वह भेड़िया अपना जलते हुआ गले से चीखता चिल्लाता वहॉ से भागने के लिये बिस्तर से कूद कर ऐसे दरवाजा ढूॅढ रहा था जैसे कि सारे गॉव के कुत्ते उसके पीछे पड़े हों।

इसी समय नानी अपने पत्ते बेच कर गॉव से वापस आ गयी। उसका खाली थैला उसके कन्धे पर पड़ा हुआ था।

उसने भेड़िये को बाहर निकलते देखा तो तुरन्त ही अपने खाली थैले का मुॅह खोल कर उस दरवाजे के सामने कर दिया जहॉ से वह भेड़िया बाहर निकल रहा था। और वह जलन से पागल भेड़िया सिर के बल उस थैले में आ गिरा।

सो वह यह भेड़िया था जो पकड़ा गया और एक चिट्ठी की तरह थैले में बन्द हो गया क्योंकि जैसे ही वह बुढ़िया के थैले के अन्दर घुसा उस बुढ़िया ने अपना थैला बन्द कर लिया।

नानी बोली — "ओ नीच तूने क्या समझा था कि तू मेरी छोटी सी धेवती[36] को खा लेगा। कल को हम तेरी खाल का मफ़लर बनायेंगे, तुझको खायेंगे और फिर तेरा ढॉचा कुत्तों को फेंक देंगे।"

उसके बाद नानी ने ब्लैन्चैट को जल्दी से कपड़े पहनाये। वह तो डर के मारे बिस्तर में अभी भी कॉप रही थी।

नानी बोली — "ज़रा सोच तो बेटी बिना मेरी टोपी के तू इस समय कहॉ होती?"

ब्लैन्चैट के धड़कते दिल और उसकी कॉपती टॉगों को ठीक करने लिये नानी ने उसको एक केक खाने के लिये दिया और थोड़ी सी शराब पिलायी। फिर वह उसका हाथ पकड़ कर उसको उसके घर छोड़ कर आयी।

और फिर बताओ कि इस घटना का पता चलने पर ब्लैन्चैट को किसने डॉटा? उसकी मॉ ने।

ब्लैनचैट ने फिर बार बार वायदा किया कि वह भेड़िये की बात सुनने के लिये रास्ते में बिल्कुल नहीं रुकेगी ताकि कम से कम उसकी मॉ तो उसको माफ कर दे। छोटी ब्लैनचैट ने अपनी बात याद रखी।

जब मौसम अच्छा होता है तो वह अपनी लाल टोपी में आज भी खेतों में देखी जा सकती है। पर अगर उसको तुमको देखना हो तो तुमको जल्दी उठना पड़ेगा।

[36] Translated for the word "Grand-daughter" – daughter of the daughter.

7 भेड़िया और तीन लड़कियॉ[37]

लाल टोपी वाली लड़की जैसी कहानियों के इस संग्रह में यह लोक कथा हमने तुम्हारे लिये यूरोप महाद्वीप के इटली देश से ली है।

एक बार तीन लड़कियॉ एक ही शहर में काम करती थीं। एक दिन उनको खबर मिली कि उनकी मॉ जो बोरगोफ़ोर्ट[38] में रहती थी बहुत बीमार थी।

तो सबसे बड़ी बहिन ने दो टोकरी में चार शराब की बोतलें रखीं और चार केक रखीं और बोरगोफ़ोर्ट की तरफ रवाना हो गयी।

रास्ते में उसको एक भेड़िया मिला। वह उससे बोला — "तुम इतनी जल्दी में कहॉ भागी जा रही हो?"

"मैं बोरगाफ़ोर्ट जा रही हूॅ अपनी मॉ को देखने के लिये। वह बहुत बीमार है।"

"उन टोकरियों में क्या है?"

"चार बोतलें शराब की और चार केक।"

"उनको मुझे दे दो वरना... अगर मैं सीधी बात कहूॅ तो मैं तुमको खा जाऊॅगा।" लड़की ने वे सब चीज़ें उसको दे दीं और भागती हुई अपनी बहिनों के घर चली गयी।

---

[37] The Wolf and the Three Girls – a folktale from Italy from its Lake of Garda area.
Adapted from the book: "Italian Folktales", by Italo Calvino. Translated by George Martin in 1980.

[38] Borgafort – a place in Italy

उसके बाद बीच वाली बहिन ने अपनी टोकरियॉ भरीं और बोरगाफ़ोर्ट की तरफ चल दी। रास्ते में उसको भी भेड़िया मिला।

उसने उससे भी वही पूछा — "इतनी जल्दी जल्दी तुम कहॉ जा रही हो?"

"मैं बोरगाफ़ोर्ट जा रही हूॅ अपनी मॉ को देखने के लिये। वह बहुत बीमार है।"

"इन टोकरियों में क्या है?"

"चार बोतल शराब है और चार केक हैं।"

"उनको मुझे दे दो वरना... अगर मैं सीधी बात कहूॅ तो मैं तुमको खा जाऊॅगा।" लड़की ने उसके सामने अपनी टोकरियॉ खाली कर दीं और भागती हुई घर चली गयी।

अब सबसे छोटी बहिन ने कहा — "अब मेरी बारी है।" उसने भी टोकरियॉ तैयार कीं और बोरगाफ़ोर्ट की तरफ रवाना हो गयी। लो भेड़िया तो उसके रास्ते में ही खड़ा था।

उसने उससे भी पूछा — "इतनी जल्दी जल्दी कहॉ जा रही हो?"

"मैं बोरगाफ़ोर्ट जा रही हूॅ अपनी मॉ को देखने के लिये। वह बहुत बीमार है।"

"इन टोकरियों में क्या है?"

"चार बोतल शराब और चार केक।"

"उनको मुझे दे दो वरना... अगर मैं सीधी बात कहूँ तो मैं तुमको खा जाऊँगा।"

छोटी लड़की ने एक केक उठायी और उसे भेड़िये के खुले हुए मुँह की तरफ फेंक दी। उसने वह केक खास करके उस भेड़िये के लिये ही बनायी थी और उसे कीलों से भर दिया था।

भेड़िये ने वह केक अपने मुँह में पकड़ ली और जैसे ही उसने उसको काटा उसके मुँह का तलवा कीलों से जख्मी हो गया।

उसने तुरन्त ही वह केक थूक दिया, पीछे की तरफ कूदा और यह चिल्लाते हुए भाग गया — "तुमको इसकी कीमत देनी पड़ेगी ओ लड़की।"

वह भेड़िया छोटा वाला रास्ता ले कर जो केवल उसी को ही मालूम था आगे आगे भाग गया और उस लड़की से पहले ही बोरगाफ़ोर्ट पहुँच गया।

वह उस छोटी लड़की की बीमार मॉ के घर में घुस गया और उसकी मॉ को खा कर उसके बिस्तर में लेट गया।

वह छोटी लड़की जब अपनी मॉ के घर में आयी तो उसने अपनी मॉ को एक चादर से ऑखों तक ढके लेटे पाया।

वह बोली — "मॉ तुम कितनी काली कैसे हो गयी हो?"

भेड़िया बोला — "मेरे बच्चे, क्योंकि मैं इतनी बीमार जो थी।"

"तुम्हारा सिर भी कितना बड़ा हो गया है मॉ।"

"क्योंकि मुझको चिन्ता बहुत थी, मेरे बच्चे।"

लड़की बोली — "मैं तुम्हारे गले लगना चाहती हूँ मॉ।" और जैसे ही वह लड़की अपनी मॉ को गले लगाने के लिये आगे बढ़ी कि भेड़िया उसको भी सारा का सारा खा गया।

अब उस लड़की और उसकी मॉ को अपने पेट में लिये वह भेड़िया वहॉ से घर के बाहर की तरफ भागा। पर गॉव के लोगों ने उसको उस घर में से भागते देख लिया सो उन्होंने सोचा कि जरूर दाल में कुछ काला है। वे अपनी अपनी कुल्हाड़ियॉ और फावड़े उठा कर उसके पीछे दौड़े।

उन्होंने उस भेड़िये को मार कर और उसका पेट फाड़ कर उस लड़की और उसकी मॉ दोनों को उसके पेट में से बाहर निकाल लिया। वे अभी तक ज़िन्दा थीं।

बाद में उन लड़कियों की मॉ ठीक हो गयी और वह छोटी लड़की अपने घर वापस चली गयी। जा कर उसने अपनी बहिनों से कहा — "देखो मैं सुरक्षित वापस आ गयी।"

8 छोटी लाल टोपी–3[39]

छोटी लाल टोपी वाली लड़की जैसी दूसरी लोक कथाओं के संग्रह की यह लोक कथा यूरोप महाद्वीप के इटली और औस्ट्रिया देशों में कही सुनी जाती है। इस लोक कथा में भेड़िये का काम एक ओगरे[40] करता है।

एक बार की बात है कि एक बुढ़िया थी जिसकी एक धेवती[41] थी। उस धेवती का नाम था छोटी लाल टोपी।

एक बार वे दोनों एक खेत में काम कर रही थीं कि बुढ़िया ने अपनी धेवती से कहा — "देख मैं अब घर जा रही हूँ। तू बाद में आ जाना और मेरे लिये सूप लेती आना।"

कुछ देर बाद छोटी लाल टोपी अपनी नानी के घर चल दी तो रास्ते मे उसको एक ओगरे मिला वह छोटी लाल टोपी से बोला — "ओ मेरी प्यारी छोटी लाल टोपी, तू कहॉ जा रही है?"

---

[39] Little Red Hat – a folktale from Italy/Austria area, Europe.
Source – "Das Rothhutchen", by Christian Schneller. 1867.
Translated by DL Ashliman
This version is taken from the Web Site : http://www.pitt.edu/~dash/type0333.html

[40] An ogre (feminine ogress) is a being usually depicted as a large, hideous, manlike monster that eats human beings – see its picture above.

[41] Translated for the word "Grand-daughter" – here the grand-daghter means the daughter of the daughter but otherwise she can be the daughter of the son also.

छोटी लाल टोपी बोली — "मैं अपनी नानी के घर उनको सूप देने जा रही हूॅ।"

ओगरे बोला — "बहुत अच्छे। मैं भी तेरे साथ साथ ही चलता हूॅ। तू पत्थरों वाला रास्ते से जायेगी या फिर कॉटों वाले रास्ते से?"

छोटी लाल टोपी बोली — "मैं पत्थरों वाले रास्ते से जाऊॅगी।"

ओगरे बोला — "मैं तो कॉटों वाले रास्ते से जाऊॅगा।"

दोनों अपने अपने रास्ते चले गये। चलते चलते छोटी लाल टोपी एक घास के मैदान में आ गयी जहॉ कई रंगों के बहुत सारे फूल खिल रहे थे। वहॉ छोटी लाल टोपी ने जी भर कर फूल तोड़े।

इस बीच ओगरे ने अपना कॉटों वाला रास्ता लिया और छोटी लाल टोपी से पहले उसकी नानी के घर पहुॅच गया। वह अन्दर गया और छोटी लाल टोपी की नानी को मार दिया। उसने नानी को खा लिया और फिर उसी के बिस्तर में लेट गया।

उसने नानी की ऑत निकाल कर तो दरवाजे में लगी रस्सी की जगह बॉध दी और उसका खून, दॉत, जबड़ा आदि रसोईघर की आलमारी में रख दिये।

यह सब करके वह बस अभी मुश्किल से नानी के बिस्तर में लेटा ही होगा कि छोटी लाल टोपी आ गयी और उसने दरवाजा खटखटाया तो ओगरे ने अपनी आवाज को कुछ मुलायम सा बनाते हुए कहा — "अन्दर आ जा ओ मेरी छोटी लाल टोपी।"

छोटी लाल टोपी ने दरवाजा खोलने की कोशिश की पर उसको लगा कि वह तो किसी मुलायम सी चीज़ को छू रही थी तो वह बोली — "नानी यह तो बहुत मुलायम है।"

नानी बोली — "बस तू उसको खींच ले और शोर न मचा। यह तेरी नानी की आँतें हैं।"

"यह आपने क्या कहा नानी?"

"बस तू उसको खींच ले और शोर न मचा।"

छोटी लाल टोपी ने उस मुलायम रस्सी को खींच लिया तो दरवाजा खुल गया। दरवाजा खोल कर वह अन्दर गयी और बोली — "नानी नानी मुझे भूख लगी है।"

ओगरे बोला — "जा देख रसोईघर की आलमारी में अभी भी थोड़ा चावल रखा है। ले कर खा ले।"

छोटी लाल टोपी रसोईघर में गयी तो उसकी आलमारी में से नानी के दाँत निकले तो उनको देख कर बोली — "नानी ये चावल तो बहुत सख्त हैं।"

ओगरे बोला — "इन्हें खा ले और चुप रह। यह तेरी नानी के दाँत हैं।"

छोटी लाल टोपी ने फिर पूछा — "यह आपने क्या कहा नानी?"

ओगरे फिर बोला — "इन्हें खा ले और चुप रह।"

कुछ देर बाद छोटी लाल टोपी फिर बोली — "नानी मैं तो अभी भी भूखी हूॅ।"

ओगरे बोला — "तो फिर से रसोई घर की आलमारी पर जा जहॉ तुझे मॉस के दो कटे हुए टुकड़े मिल जायेंगे। उन्हें खा ले।"

छोटी लाल टोपी फिर से आलमारी के पास गयी और उसने वहॉ से दो जबड़े निकाले और बोली — "नानी ये तो बहुत लाल हैं।"

ओगरे बोला — "इन्हें खा ले और चुप रह। यह तेरी नानी के जबड़े हैं।"

छोटी लाल टोपी बोली — "यह आपने क्या कहा नानी?"

ओगरे बोला — "इन्हें खा ले और चुप रह।"

कुछ देर बाद छोटी लाल टोपी बोली — "नानी मुझे प्यास लगी है।"

ओगरे बोला — "जा कर रसोईघर की आलमारी में देख वहॉ कुछ शराब रखी होगी।"

छोटी लाल टोपी फिर रसोईघर की आलमारी पर गयी और वहॉ से खून निकाला तो उसको देख कर बोली — "नानी यह शराब तो बहुत लाल है।"

ओगरे बोला — "इसको पी ले और चुप रह। यह तेरी नानी का खून है।"

छोटी लाल टोपी बोली — "यह आपने क्या कहा नानी?"

ओगरे बोला — "बस इसको पी ले और चुप रह।"

थोड़ी देर बाद छोटी लाल टोपी बोली — "नानी मुझे अब नींद आ रही है।"

ओगरे बोला — "अपने कपड़े उतार दे और मेरे पास मेरे बिस्तर में आ कर सो जा।"

छोटी लाल टोपी ने अपने कपड़े उतारे और ओगरे के साथ उसके बिस्तर में जा कर लेट गयी।

वहॉ उसको कुछ बाल महसूस हुए तो वह बोली — "नानी आप के तो इतने सारे बाल हैं।"

ओगरे बोला — "ये जब लोग बड़े हो जाते हैं तब आते हैं।"

छोटी लाल टोपी बोली — "पर आपकी तो टॉगें भी बहुत लम्बी हैं।"

ओगरे बोला — "बेटी ऐसा बहुत चलने से हो जाता है।"

छोटी लाल टोपी बोली — "आपके हाथ भी बहुत लम्बे हैं।"

ओगरे बोला — "ऐसा बहुत काम करने से होता है बेटी।"

छोटी लाल टोपी ने फिर पूछा — "और आपके ये कान? ये भी तो बहुत लम्बे हैं।"

ओगरे बोला — "ऐसा बहुत सुनने से होता है।"

छोटी लाल टोपी बोली — "पर आपका तो मुॅह भी बहुत बड़ा है नानी।"

ओगरे बोला — "और यह बच्चों को खाने से हो जाता है।"
यह कह कर वह ओगरे छोटी लाल टोपी को खा गया।

9 कैटैरीनैटा[42]

छोटी लाल टोपी वाली लड़की जैसी दूसरी लोक कथाओं के संग्रह की यह लोक कथा यूरोप महाद्वीप के इटली देश में कही सुनी जाती है।

इस लोक कथा में भेड़िये वाला काम एक जादूगरनी करती है। तो लो पढ़ो इटली में कही सुनी जाने वाली यह लोक कथा।

एक बार की बात है कि एक जगह एक स्त्री रहती थी जिसके एक बेटी थी। उसका नाम था कैटैरीनैटा[43]। एक दिन वह स्त्री केक बनाना चाहती थी सो उसने केक बनाने का बरतन लाने के लिये उसको उसकी बुआ के पास भेजा।

उसकी यह बुआ[44] एक बुरी जादूगरनी[45] थी। उसकी बुआ ने उसको केक बनाने का बरतन दे तो दिया पर उससे कहा — "जब तुम्हारा केक बन जाये कैटैरीनैटा मेरे लिये केक लाना मत भूलना।"

कैटैरीनैटा केक का बरतन ले कर घर चली आयी। उसकी मॉ ने केक बनाया और उसमें से एक

[42] Catarinetta – a folktale from Italy, Europe. By Charles Marelles.
Source: Christian Schneller, "Cattarinetta," *Märchen und Sagen aus Wälschtirol* (Innsbruck: Verlag der Wagner'schen Universitäts-Buchhandlung, 1867), no. 5, pp. 8-9.
This version is taken from the Web Site : http://www.pitt.edu/~dash/type0333a.html

[43] Catarinetta – name of the girl

[44] Translated for the word "Aunty". Here its meaning is taken as father's sister.

[45] Translated for the word "Witch".

टुकड़ा काट कर एक बरतन में रखा। वह बरतन उसने अपनी बेटी को देते हुए कहा — "जा यह केक अपनी बुआ के लिये ले जा।"

कैटैरीनैटा जब केक ले कर जा रही थी तो उसकी नाक में केक की भीनी भीनी खुशबू पड़ी तो वह अपने आपको रोक नहीं पायी और उसने उसमें से एक छोटा सा टुकड़ा खा लिया।

उससे उसका मन नहीं भरा सो उसने फिर दूसरा टुकड़ा खाया, फिर तीसरा और फिर चौथा। इस तरह से उसने वह सारा केक खत्म कर दिया जो वह अपनी बुआ के लिये ले कर जा रही थी।

यह देख कर वह डर गयी कि अब वह अपनी बुआ को ले जा कर क्या देगी कि उसको रास्ते में पड़ा गाय का गोबर दिखायी दे गया। उसको देख कर उसके दिमाग में एक चाल आयी।

उसने उसको उठा कर अपने केक वाले बरतन में रख लिया। अब वह उस बरतन में रखा हुआ केक के रंग जैसा कत्थई रंग का केक का टुकड़ा लग रहा था।

जैसे ही कैटैरीनैटा अपनी बुआ के घर पहुॅची तो उसकी बुआ ने पूछा — "कैटैरीनैटा क्या तू मेरे केक ले कर आयी?"

"हॉ बुआ।" कह कर उसने केक का वह बरतन जल्दी से नीचे रख दिया और तुरन्त ही अपने घर लौट आयी।

जब रात हो गयी तब वह सोने चली गयी। पर तभी उसको उसकी बुआ की आवाज सुनायी पड़ी — "कैटैरीनैटा मैं आ रही हूॅ। मैं तेरे घर के सामने वाले दरवाजे पर हूॅ।"

कैटैरीनैटा अपने बिस्तर में और ज़्यादा दुबक गयी पर उसकी बुआ कुछ कुछ देर के बाद बोलती रही — "मैं आ रही हूँ कैटैरीनैटा, मैं आ रही हूँ। मैं अब तेरी सीढ़ियों पर हूँ।"

"मैं आ रही हूँ कैटैरीनैटा, मैं आ रही हूँ। मैं अब तेरे कमरे के दरवाजे पर हूँ।"

"मैं आ रही हूँ कैटैरीनैटा, मैं आ रही हूँ। मैं तो अब तेरे बिस्तर के पास ही हूँ।"

और फिर गटक। वह तो कैटैरीनैटा को खा ही गयी। इस तरह कैटैरीनैटा के लालच का फल उसको मिला।

10 तैरने वाली बतख जमीमा की कहानी[46]

छोटी लाल टोपी वाली लड़की जैसी दूसरी लोक कथाओं के संग्रह की यह लोक कथा यूरोप महाद्वीप के इंगलैंड देश में कही सुनी जाती है।

एक मुर्गी के साथ किसी बतख के बच्चों को देखना भी क्या दृश्य होता है। तो सुनो यह कहानी जमीमा बतख[47] की जो कि एक किसान की पत्नी से बहुत नाराज थी।

क्यों भला? उसको किसान की पत्नी से नाराज होने की क्या जरूरत थी। क्योंकि वह उसको उसके अपने ही अंडों को सेने नहीं दे रही थी।

जमीमा बतख की भाभी मिसेज़ रिबैका बतख[48] तो इस बात के लिये बिल्कुल तैयार थी कि अंडों का सेना किसी और के ऊपर छोड़ दिया जाये।

उसका कहना था — "मेरे अन्दर इतना धीरज नहीं है कि मैं अपने घोंसले में इन अंडों के ऊपर अट्ठाईस दिन तक बैठूँ। और

---

[46] The Tale of Jemima Puddle-Duck – a folktale from England, Europe. By Beatrix Potter.
Source – "The Tale of Jemima Puddle-duck" by Beatrix Potter. 1908.
This version is taken from the Web Site : http://www.pitt.edu/~dash/type0333.html
[My Note – To me, although written in 1908, this story seems very modern and not like a folktale, but of course it is like "Little Red Riding Hood".]

[47] Translated for the word "Puddle-duck

[48] Rebeccah Puddle-duck – name of Jemima's brother's wife

जमीमा जीजी शायद तुम भी इतने दिनों तक नहीं बैठ पाओगी। उनको ठंडा ही पड़ा रहने दो।"

जमीमा जीजी बोली — "मैं अपने अंडे अपने आप ही सेना चाहती हूॅ भाभी। असल में तो मैं अपने सब अंडों को अपने आप ही सेना चाहती हूॅ।"

वह अपने अंडों को छिपाने की कोशिश करती पर वे हमेशा ही ढूॅढ लिये जाते और उनको कोई ले जाता। जमीमा बतख अपने अंडे सेने के लिये बहुत इच्छुक थी सो उसने खेत से दूर अपना एक घोंसला बनाने का फैसला किया।

एक वसन्त के दिन शाम को वह गाड़ियों के लिये जाने वाले रास्ते पर चल दी जो पहाड़ी के ऊपर तक जाता था। उसने एक शाल ओढ़ रखा था और एक पोक बोनैट[49] पहन रखा था।

जब वह पहाड़ी के ऊपर पहुॅच गयी तो उसको सामने एक जंगल दिखायी दिया। उसको लगा कि वह जरूर ही कोई सुरक्षित और शान्त जगह होगी।

जमीमा को उड़ने की बहुत ज़्यादा आदत नहीं थी फिर भी वह अपना शाल उड़ाते हुए कुछ गज पहाड़ी के नीचे की तरफ दौड़ी

[49] Poke bonnet is a hood-shaped hat tied under the chin, with a small crown at the back and a wide projecting front brim that shaded the face. It became fashionable at the beginning of the 19th century and was worn by women and children of all ages. The size of the poke bonnet increased until, in 1830, a woman's face could not be seen except from directly in front. In 1860 its fashion ended – see its picture above.

और फिर हवा में उड़ गयी। उसके बाद तो वह फिर बहुत आसानी से उड़ गयी।

वह पेड़ों के ऊपर से उड़ती रही जब तक कि उसको उस जंगल में फौक्स ग्लव्ज़[50] के बागीचे के पास एक खाली साफ जगह नहीं मिल गयी। वहॉ कोई पेड़ नहीं था सो जमीमा वहॉ उतर गयी और अपने घोंसले के लिये एक सूखी आराम की जगह ढूँढने के लिये इधर उधर घूमने लगी।

इस काम के लिये उसको एक पेड़ का कटा हुआ तना ज़्यादा अच्छा लगा पर उसने देखा कि उस तने पर तो एक भला आदमी बड़े अच्छे से कपड़े पहने बैठा अखबार पढ़ रहा था। उसके काले नुकीले कान थे और रेत के रंग की मूँछें थीं।

जमीमा बतख ने अपनी बोनैट एक तरफ की और उसके पास जा कर बोली — "क्वैक क्वैक।"

उस भले आदमी ने अखबार के ऊपर से अपनी ऑखें उठा कर जमीमा की तरफ देखा और बड़ी नम्रता से पूछा — "मैम, क्या आप रास्ता भूल गयीं हैं?"

[50] Fox-gloves is a kind of flower – see the picture of this flower above.

उसकी बहुत बालों वाली एक लम्बी सी पूँछ थी जिसके ऊपर वह बैठा हुआ था क्योंकि वह पेड़ का तना कुछ सीला सा था। जमीमा को लगा कि वह बहुत ताकतवर और तरीके वाला आदमी था।

उसने उस भले आदमी से कहा कि वह रास्ता नहीं भूली है बल्कि अपना घोंसला बनाने के लिये एक सूखी आराम की जगह ढूँढने आयी है।

उस रेत के रंग की मूँछों वाले आदमी ने जमीमा की तरफ उत्सुकता से देखते हुए कहा — "अच्छा ऐसी बात है?"

कह कर उसने अपना अखबार मोड़ कर अपने कोट की जेब में रख लिया। जमीमा ने फिर उससे बेकार की मुर्गी की शिकायत की तो वह बड़े बालों की पूँछ वाला भला आदमी बोला — "यह तो बहुत ही मजेदार बात है। पर मैं अगर उस मुर्गी से मिल पाता तो मैं उसको बताता कि उसको अपने काम से काम रखना चाहिये।

पर जहॉ तक घोंसला बनाने का सवाल है उसमें आपको कोई परेशानी नहीं होनी चाहिये। मेरे लकड़ी के एक शैड में बहुत सारे पंख भरे है। अगर आप वहॉ अपना घोंसला बना लेंगी मैम तो आप वहॉ किसी के रास्ते में भी नहीं आयेंगी। और इसके अलावा आप

वहॉ जितनी देर तक चाहें उतनी देर तक बैठ भी सकती हैं।"

कह कर वह जमीमा को फौक्स ग्लव्ज़ के बागीचे में एक अकेली सी जगह ले गया। वहॉ लकड़ी के लट्ठों से बना एक शैड था और वहॉ उस शैड में एक के ऊपर एक दो टूटी हुई बालटियॉ भी चिमनी से लटकी हुई थीं।

वहॉ ले जा कर उस भले आदमी ने जमीमा बतख से कहा — "यह मेरी गर्मियों में रहने की जगह है आप यहॉ आराम से अपना घोंसला बना लें। मेरी जाड़ों में रहने की जगह आपको इतनी आरामदेह नहीं लगेगी।"

यह शैड साबुन के पुराने डिब्बों का बना हुआ था और एक मकान के पीछे की तरफ था। उस भले आदमी ने उस शैड का दरवाजा खोला और जमीमा को अन्दर ले गया।

वह पूरा का पूरा शैड पंखों से भरा पड़ा था। उसके अन्दर तो दम घुटने वाला हो रहा था पर फिर भी वह बहुत आरामदेह और मुलायम था।

जमीमा इतने सारे पंख देख कर बहुत आश्चर्य में पड़ गयी कि वहॉ इतने सारे पंख कहॉ से आये पर वह जगह बहुत ही आरामदेह थी इसलिये उसको कोई शक नहीं हुआ। जमीमा ने बिना किसी परेशानी के वहॉ अपना घोंसला बना लिया।

जब वह बाहर आ गयी तो उसने देखा कि वह रेत के रंग वाली मूँछों वाला भला आदमी एक लट्ठे पर बैठा फिर से अखबार

पढ़ रहा था, या नहीं पढ़ रहा था पर कम से कम उसने उसको अपने सामने फैला रखा था। असल में तो अखबार पढ़ ही नहीं रहा था वह तो उस अखबार के ऊपर से केवल देख रहा था।

जमीमा रात के लिये अपने घर जाना चाहती थी पर वह भला आदमी उसके लिये इतना नम्र था कि वह उसके केवल रात के लिये भी घर जाने से बहुत दुखी था।

उसने जमीमा से वायदा किया कि जब तक वह अगले दिन तक वापस वहॉ लौट कर आती है वह उसके घोंसले की ठीक से देखरेख करेगा।

उसने कहा कि उसको बतख के अंडों और बच्चों से बहुत प्यार है। उसको अपना शैड उनसे भरा हुआ देख कर बहुत खुशी होगी।

अब जमीमा हर शाम को वहॉ आती। वहॉ उसने नौ अंडे दिये। वे हरा रंग लिये सफेद अंडे थे और बहुत बड़े थे। उस भले आदमी ने उन अंडों की बड़ी तारीफ की। जब जमीमा वहॉ नही होती तो वह उनको उलटता पलटता और उनको गिनता।

आखिर जमीमा बतख ने उसको बताया कि वह अगले दिन से

अपने उन अंडों पर बैठना शुरू करेगी। वह एक थैला मक्का के दाने भी ले कर आयेगी ताकि जब तक वह अंडों पर बैठे उसको वहॉ भूखा न रहना पड़े।

और उसको खाना खाने के लिये अपने अंडों को छोड़ कर कहीं और न जाना पड़े जब तक उनमें से बच्चे न निकल आयें क्योंकि उस समय उन अंडों को ठंड लग सकती है।

वह रेत के रंग की मूँछों वाला भला आदमी जमीमा बतख से बोला — "मैम मेहरबानी करके आप मक्का के दाने का थैला लाने की तकलीफ न करें। मैं आपको यहॉ ओट्स[51] दे दूँगा। जब तक आप यहॉ रहेंगी आप ओट्स खा सकती हैं।

पर इससे पहले कि आप अपना यह मुश्किल काम शुरू करें मैं आपको कुछ अच्छा खाना खिलाना चाहता हूँ। आज हम लोग अपनी एक बढ़िया दावत करते हैं जिसमें केवल आप और मैं ही होंगे।

क्या मैं आपसे अपने खेत के बागीचे से कुछ पत्ते लाने की प्रार्थना कर सकता हूँ, जैसे सेज, थाइम, पार्सले[52], पुदीना, दो प्याज, ताकि हम नमकीन वाला औमेलेट[53] बना सकें। औमेलेट के लिये घी मैं दे दूँगा।"

[51] A kind of grain, normally eaten cooked in water or milk in breakfast – see its picture above.

[52] All these are the herbs to use in Western dishes.

[53] A dish of eggs – egg is broken, whisked, spread on a greased pan and then cooked either on one side or both sides.

जमीमा एक बहुत ही सीधी सादी बतख थी। उसको सेज और प्याज का नाम सुन कर भी कोई शक नहीं हुआ कि वह भला आदमी उनसे क्या करना चाहता था।

वह खेत के बागीचे में गयी और वहॉ कई पत्तों को चख चख कर देखती रही जो भुनी हुई बतख में भरने के लिये इस्तेमाल किये जाते हैं। फिर वह अपनी रसोई में गयी और वहॉ से अपनी टोकरी में से उसने दो प्याज निकालीं।

जब वह प्याज निकाल कर बाहर आ रही थी तो उसको कैप[54] कुत्ता मिल गया। उसने पूछा — "यह तुम इन प्याज का क्या कर रही हो जमीमा बहिन? और हॉ रोज शाम को तुम अकेली कहॉ जाती हो?"

जमीमा उस कुत्ते को बहुत मानती थी सो उसने उसको सारी कहानी सुना दी। कैप ने अपने सिर को एक तरफ करके बड़े ध्यान से उसकी कहानी सुनी। जब जमीमा ने उसको बताया कि वह भला आदमी रेत के रंग वाली मूँछों वाला था तो वह मुस्कुराया।

उसने उससे जंगल के बारे में और भी कई सवाल पूछे। फिर उसने उस घर और उस शैड की जगह के बारे में भी कई सवाल पूछे कि वे कहॉ थे। फिर वह वहॉ से बाहर गॉव की तरफ चला गया। वहॉ जा कर उसने दो कुत्ते ढूँढे जो एक कसाई के साथ घूम रहे थे।

[54] Kep dog

जमीमा बतख उस शाम को उस गाड़ी जाने वाली सड़क पर अखिरी बार चल दी। वह अपने साथ एक थैले में कुछ पत्ते और दो प्याज ले जा रही थी जैसा कि उस रेत के रंग वाली मूँछों वाले आदमी ने उससे लाने के लिये कहा था।

वह जंगल के ऊपर से उड़ी और फिर उस लम्बी घनी पूँछ वाले भले आदमी के घर के सामने उतर गयी। वह भला आदमी एक लट्ठे पर बैठा हुआ था। वह हवा में कुछ सूँघ रहा था और बेचैनी से जंगल में इधर उधर देख रहा था। जैसे ही जमीमा वहॉ उतरी तो वह तो खुशी से कूद ही पड़ा।

उसने जमीमा से कहा — "तुम जब अपने अंडे देख लो तो घर में आ जाना। और हॉ मुझे औमेलेट बनाने के लिये वे पत्ते दे दो। जल्दी करो।"

वह कुछ अटक अटक कर बोल रहा था। जमीमा बतख ने पहले उसको इस तरह बोलते कभी नहीं सुना था। उसको थोड़ा आश्चर्य भी हुआ और कुछ उसको परेशानी भी हुई पर फिर जल्दी ही वह उसको भूल गयी।

जब वह अन्दर थी तो उसने शैड के चारों तरफ कुछ पैरों की आहट सुनी। किसी काली नाक वाले ने दरवाजे के नीचे कुछ सूँघा और फिर दरवाजा बन्द कर लिया। जमीमा बतख यह देख कर चौकन्नी हो गयी।

कुछ पल बाद ही उसको बहुत तेज़ तेज़ भौंकने की गुर्राने की आवाजें सुनायी देने लगीं और फिर लोमड़े जैसी मूँछों वाले उस भले आदमी का कोई पता नहीं चला।

कैप कुत्ते ने शैड का दरवाजा खोला और जमीमा बतख को बाहर निकाला। पर इससे पहले कि कैप उन दोनों कुत्तों को अन्दर जाने से रोकता बदकिस्मती से वे कुत्ते तुरन्त ही अन्दर दौड़ गये और उन्होंने जमीमा बतख के सारे अंडे खा लिये।

उसने उनके कानों पर काटा तो वे लंगड़ाने लगे।

जमीमा बतख अपने सारे अंडे खाये जाते देख कर बहुत दुखी हो गयी। उसको तसल्ली दे कर किसी तरह घर ले जाया गया।

उसने जून के महीने में फिर से कुछ अंडे दिय। इस बार उसको उनको अपने पास रखने की इजाज़त दे दी गयी पर उनमें से केवल चार अंडों में से ही बच्चे निकले।

जमीमा बतख बोली — "ऐसा इसलिये हुआ क्योंकि उसमें बहुत हिम्मत थी वरना वह हमेशा से ही बुरी सेने वाली बतख रही है।

Red Riding Hood Like Stories

1. Little Red Riding Hood
2. Little Red Cap-1
3. Little Red Hood-2
4. Grandmother
5. False Grandmother
6. The True History of Little Golden Hood
7. The Wolf and the Three Girls
8. Little Red Hat
9. Catarinetta
10. The Tale of Jemima Puddle-Duck

Some Resources to Read "Red Riding Hood" Story

Bates, Mrs Clara Doty
Red Riding-Hood. Boston, D. Lothrop & Co, Publishers. 1883. 15 p

Croser, Nigel
Little Red Riding Hood. Flinders Park (SA), Australia, Era Publications. 2003.

Dahl, Roald
Little Red Riding Hood and the Wolf. IN Fiction and Poetry Texts, Year 5.
Edited by Julie Orrell and Eileen Jones. Cheltenham (UK), Nelson Thomes, 2004), p. 23.

Grimm, Jacob and Wilhelm.
The Grimm Brothers' Little Red Cap, version of 1857.
This version is only slightly different from the version of 1812.

Lang, Andrew, ed.
"Little Red Riding Hood." *The Blue Fairy Book.* New York, Dover, 1965.
(Original published 1889.)

Perrault, Charles
http://www.surlalunefairytales.com/authors/perrault/redridinghood.html

Thackeray, Miss Anne Thackeray Ritchie.
Little Red Riding Hood. Boston, Loring, 1867.

http://www.surlalunefairytales.com/ridinghood/

http://www.endicott-studio.com/articleslist/the-path-of-needles-and-pinsby-terri-windling.html

Books in "One Story Many Colors" Series

1. Cat and Rat Like Stories
2. Tom Thumb Like Stories
3. Six Swans Like Stories
4. Three Oranges Like Stories
5. Snow White and the Seven Dwarves Like Stories
6. Sleeping Beauty Like Stories
7. Pig King Like Stories
8. Puss in Boots Like Stories
9. Hansel and Gratel Like Stories
10. Red Riding Hood Like Stories
11. Cinderella Like Stories
12. Cinderella in the World
13. Rumplestiltuskin Like Stories
14. Ali Baba and Forty Thieves Like Stories
15. Crocodile and Monkey Like Stories

देश विदेश की लोक कथाओं की सीरीज़ में प्रकाशित पुस्तकें —

36 पुस्तकें www.Scribd.com/Sushma_gupta_1 पर उपलब्ध हैं।

नीचे लिखी हुई पुस्तकें हिन्दी ब्रेल में संसार भर में उन सबको निःशुल्क उपलब्ध है जो हिन्दी ब्रेल पढ़ सकते हैं।
Write to :- E-Mail : hindifolktales@gmail.com
1 नाइजीरिया की लोक कथाऐं–1
2 नाइजीरिया की लोक कथाऐं–2
3 इथियोपिया की लोक कथाऐं–1
4 रैवन की लोक कथाऐं–1

नीचे लिखी हुई पुस्तकें ई–मीडियम पर सोसायटी औफ फौकलोर, लन्दन, यू के, के पुस्तकालय में उपलब्ध हैं।
Write to :- E-Mail : thefolkloresociety@gmail.com
1 ज़ंज़ीबार की लोक कथाऐं — 10 लोक कथाऐं — सामान्य छापा, मोटा छापा दोनों में उपलब्ध
2 इथियोपिया की लोक कथाऐं–1 — 45 लोक कथाऐं — सामान्य छापा, मोटा छापा दोनों में उपलब्ध

नीचे लिखी हुई पुस्तकें हार्ड कापी में बाजार में उपलब्ध हैं।
To obtain them write to :- E-Mail drsapnag@yahoo.com
1 रैवन की लोक कथाऐं–1 — इन्द्रा पब्लिशिंग हाउस
2 इथियोपिया की लोक कथाऐं–1 — प्रभात प्रकाशन
3 इथियोपिया की लोक कथाऐं–2 — प्रभात प्रकाशन
4 शेबा की रानी मकेडा और राजा सोलोमन — प्रभात प्रकाशन
5 राजा सोलोमन — प्रभात प्रकाशन
6 बंगाल की लोक कथाऐं — नेशनल बुक ट्रस्ट

नीचे लिखी पुस्तकें रचनाकार डाट आर्ग पर मुफ्त उपलब्ध हैं जो टैक्स्ट टू स्पीच टैकनोलोजी के द्वारा दृष्टिबाधित लोगों द्वारा भी पढ़ी जा सकती हैं।
1 इथियोपिया की लोक कथाऐं–1
http://www.rachanakar.org/2017/08/1-27.html
2 इथियोपिया की लोक कथाऐं–2
http://www.rachanakar.org/2017/08/2-1.html
3 रैवन की लोक कथाऐं–1
http://www.rachanakar.org/2017/09/1-1.html
4 रैवन की लोक कथाऐं–2
http://www.rachanakar.org/2017/09/2-1.html
5 रैवन की लोक कथाऐं–3
http://www.rachanakar.org/2017/09/3-1-1.html
6 इटली की लोक कथाऐं–1
http://www.rachanakar.org/2017/09/1-1_30.html

7 इटली की लोक कथाऐं–2
http://www.rachanakar.org/2017/10/2-1.html
8 इटली की लोक कथाऐं–3
http://www.rachanakar.org/2017/10/3-1.html
9 इटली की लोक कथाऐं–4
http://www.rachanakar.org/2017/10/4-1.html
10 इटली की लोक कथाऐं–5
http://www.rachanakar.org/2017/10/5-1-italy-lokkatha-5-seb-wali-ladki.html
11 इटली की लोक कथाऐं–6
http://www.rachanakar.org/2017/11/6-1-italy-ki-lokkatha-billiyan.html
12 इटली की लोक कथाऐं–7
http://www.rachanakar.org/2017/11/7-1-italy-ki-lokkatha-kaitherine.html
13 इटली की लोक कथाऐं–8
http://www.rachanakar.org/2017/12/8-1-italy-ki-lokkatha-patthar-se-roti.html
14 इटली की लोक कथाऐं–9
http://www.rachanakar.org/2017/12/9-1-italy-ki-lok-katha-do-bahine.html
15 इटली की लोक कथाऐं–10
http://www.rachanakar.org/2017/12/10-1-italy-ki-lok-katha-teen-santre.html
16 ज़ंज़ीबार की लोक कथाऐं
http://www.rachanakar.org/2018/05/blog-post_54.html
17 चालाक ईकटोमी
http://www.rachanakar.org/2018/05/blog-post_88.html

नीचे लिखी पुस्तकें जुगरनौट डाट इन पर उपलब्ध हैं
https://www.juggernaut.in/authors/2a174f5d78c04264af63d44ed9735596
1 सोने की लीद करने वाला घोड़ा और अन्य अफ्रीकी लोक कथाऐं
2 असन्तुष्ट लड़की और अन्य अमेरिकी लोक कथाऐं
3 रैवन आग कैसे लेकर आया और अन्य अमेरिकी लोक कथाऐं
4 रैवन ने शादी की और अन्य अमेरिकी लोक कथाऐं
5 कौआ दिन लेकर आया और अन्य अमेरिकी लोक कथाऐं

Facebook Group
https://www.facebook.com/groups/hindifolktales/?ref=bookmarks

Updated on May 27, 2018

लेखिका के बारे में

सुषमा गुप्ता का जन्म उत्तर प्रदेश के अलीगढ़ शहर में सन् **1943** में हुआ था। इन्होंने आगरा विश्वविद्यालय से समाज शास्त्र और अर्थ शास्त्र में ऐम ए किया और फिर मेरठ विश्वविद्यालय से बी ऐड किया। **1976** में ये नाइजीरिया चली गयीं। वहाँ इन्होंने यूनिवर्सिटी औफ़ इबादान से लाइब्रेरी साइन्स में ऐम ऐल ऐस किया और एक थियोलोजीकल कौलिज में **10** वर्षों तक लाइब्रेरियन का कार्य किया।

वहाँ से फिर ये इथियोपिया चली गयीं और वहाँ एडिस अबाबा यूनिवर्सिटी के इन्स्टीट्यूट औफ़ इथियोपियन स्टडीज़ की लाइब्रेरी में **3** साल कार्य किया। तत्पश्चात इनको दक्षिणी अफ्रीका के एक देश लिसोठो के विश्वविद्यालय में इन्स्टीट्यूट औफ़ सदर्न अफ्रीकन स्टडीज़ में **1** साल कार्य करने का अवसर मिला। वहाँ से **1993** में ये यू ऐस ए आ गयीं जहाँ इन्होंने फिर से मास्टर औफ़ लाइब्रेरी ऐंड इनफौर्मेशन साइन्स किया। फिर **4** साल ओटोमोटिव इन्डस्ट्री एक्शन ग्रुप के पुस्तकालय में कार्य किया।

1998 में इन्होंने सेवा निवृत्ति ले ली और अपनी एक वेब साइट बनायी – www.sushmajee.com। तब से ये उसी वेब साइट पर काम कर रहीं हैं। उस वेब साइट में हिन्दू धर्म के साथ साथ बच्चों के लिये भी काफी सामग्री है।

भिन्न भिन्न देशों में रहने से इनको अपने कार्यकाल में वहाँ की बहुत सारी लोक कथाओं को जानने का अवसर मिला – कुछ पढ़ने से, कुछ लोगों से सुनने से और कुछ ऐसे साधनों से जो केवल इन्हीं को उपलब्ध थे। उन सबको देख कर इनको ऐसा लगा कि ये लोक कथाऐं हिन्दी जानने वाले बच्चों और हिन्दी में रिसर्च करने वालों को तो कभी उपलब्ध ही नहीं हो पायेंगी – हिन्दी की तो बात ही अलग है अंग्रेजी में भी नहीं मिल पायेंगीं।

इसलिये इन्होंने न्यूनतम हिन्दी पढ़ने वालों को ध्यान में रखते हुए उन लोक कथाओं को हिन्दी में लिखना प्रारम्भ किया। इन लोक कथाओं में अफ्रीका, एशिया और दक्षिणी अमेरिका के देशों की लोक कथाओं पर अधिक ध्यान दिया गया है पर उत्तरी अमेरिका और यूरोप के देशों की भी कुछ लोक कथाऐं सम्मिलित कर ली गयी हैं।

अभी तक **1200** से अधिक लोक कथाऐं हिन्दी में लिखी जा चुकी है। इनको "देश विदेश की लोक कथाऐं" क्रम में प्रकाशित करने का प्रयास किया जा रहा है। आशा है कि इस प्रकाशन के माध्यम से हम इन लोक कथाओं को जन जन तक पहुँचा सकेंगे।

विंडसर, कैनेडा
मई **2018**